अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

वार्षिक मूल्य ६) ✱ सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार ✱ एक प्रति २ आना

वर्ष-३, अंक-८ ✱ राजघाट, काशी ✱ शुक्रवार, २३ नवंबर, '५६

अहिंसा में तीव्र कार्यसाधक शक्ति भरी हुई है। इसमें जो अमोघ शक्ति है, उसकी अभी पूरी खोज नहीं हुई है। 'अहिंसा के समीप सारे वैर-द्वेष शांत हो जाते हैं', यह सूत्र शास्त्रों का प्रलाप नहीं है, बल्कि ऋषि का अनुभव-वाक्य है। जाने-अनजाने, प्रकृति की प्रेरणा से, सब प्राणियों ने एक-दूसरे के लिए कष्ट उठाने का धर्म पहचाना है और उसके आचरण द्वारा संसार को निभाया है। तथापि इस शक्ति का संपूर्ण विकास और सब कार्यों और प्रसंगों में इसके प्रयोग के मार्ग का अभी ज्ञानपूर्वक शोधन-संगठन नहीं हुआ है। हिंसा के मार्गों के शोधन और संगठन करने का मनुष्य ने जितना दीर्घ उद्योग किया है और उसका बहुत अंशों में शास्त्र बना डालने में सफलता पायी है; उतना यदि वह अहिंसा की शक्ति के शोधन और संगठन के लिए करे, तो मनुष्य-जाति के दुःखों के निवारणार्थ यह एक अनमोल, अचूक और परिणाम में उभय पक्ष का कल्याण करने वाला साधन सिद्ध होगा।

—महात्मा गांधी

भूदान द्वारा विश्वशान्ति

(विनोबा)

[विनोबाजी ने अस्वस्थता के कारण धारापुरम् में ३ नवम्बर से ११ नवम्बर तक विश्राम किया। ८ नवम्बर को दोपहर के समय कोइंबतूर जिले के प्रमुख कार्यकर्ताओं की सभा हुई, जिसमें कार्यकर्ताओं के भाषणों के पश्चात् विनोबाजी का निम्नलिखित भाषण हुआ—सं०]

हमें आप लोगों के बीच दो-ढाई महीने रहने का अवसर मिला। यह हमारा सौभाग्य है कि हम हिन्दुस्तान में जहाँ भी गये, हमें अपना घर ही मालूम हुआ। यहाँ पर भी यही अनुभव आया। यहाँ के मित्रों ने हमें किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहने दी। अभी हम बीमार पड़े हैं, लेकिन उसकी जिम्मेदारी हमारी है, यहाँ के मित्रों की नहीं है। करीब ३॥-४ साल पहले हम इसी तरह बिहार में बीमार पड़े थे। उसमें भी वहाँ के लोगों का कसूर नहीं था, हमारा ही कसूर था। हम कोशिश तो करते हैं कि जीवन, चिंतन, दिनचर्या—कुल समत्वपूर्वक, योगपूर्वक चले और हमारा इसमें विश्वास है कि जो योगपूर्वक व्यवहार करता है, उसके लिए बीमारी है ही नहीं। जब योग में कुछ दोष पैदा होता है, तब रोग होता है। यह हमारा आत्म-परीक्षण का विषय है और हमें इसका दुःख है कि हमारे रोग के कारण आपको मानसिक चिन्ता हुई।

किसी भी संस्था की सदस्यता अस्वीकार

इस काम के लिए कई लोगों ने २-२॥ महीने अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार मदद दी है। मुझे उन सबका उपकार मानना चाहिए। मैं जब अपने लिए सोचता हूँ, तो मुझे माणिकवाच्यकम् का वचन याद आता है—नान् यार, येन उल्लम् यार, ज्ञानम् यार, इंग येनै यार, अखिर "मैं कौन हूँ, मेरा क्या ज्ञान है? मेरी कहाँ पहुँच है, मुझे कौन पहचानता है?" ठीक यही विचार हमारे मन में बहुत दफा आता है। लोग जो मदद देते हैं, वह कुल काम की दृष्टि से कम पड़ती है, तो भी हम अपने मन में सोचते हैं कि हमारी ऐसी क्या तपस्या है कि लोग हमें इतनी मदद दें। सब लोग जानते हैं कि हमारे हाथ में कोई सत्ता नहीं है, न हमारे हाथ में कोई खास निर्दिष्ट संस्था ही है। इसमें मेरा कुछ दोष नहीं है, बल्कि मैंने इसे अपना गुण माना है। पहले हमारा अनेक संस्थाओं से सम्बन्ध था और आज भी बहुत सारी संस्थाओं में हमारे मित्र ही मित्र पड़े हैं। अगर हम किसी संस्था में दाखिल होना चाहेंगे और उसके जरिये काम लेंगे, तो लोग बड़ी खुशी से हमें मौका देंगे। बहुत लोग मुझे समझाते भी हैं कि तुम संस्थाओं का आश्रय नहीं लेते हो, यह तुमने एक अहंकार ही रखा है। लेकिन बात ऐसी नहीं है। मदद तो सबकी स्वागतार्थ है, व्यक्तिगत मदद भी और संस्थाओं के जरिये भी, और ऐसी मदद मिलती भी है। परन्तु हमने अपने विचार में किसी संस्था को स्थान नहीं दिया, उसमें हमने अपना एक बुनियादी विचार माना है।

मैं राजनैतिक संस्थाओं की बात तो छोड़ ही देता हूँ, लेकिन दूसरी जो रचनात्मक संस्थाएँ हैं, उनमें से भी किसी संस्था का मैं सदस्य नहीं हूँ। एक जमाने में 'गांधी-संघ' स्थापित हुआ था, जिसके अध्यक्ष हमारे परम मित्र स्व. किशोरलालभाई थे और हमारे बहुत सारे मित्र, बिलकुल नजदीक के आश्रमवासी भी उसके सदस्य थे। किशोरलालभाई ने भी बड़े आग्रह के साथ कहा था कि मैं उसमें दाखिल हो जाऊँ, तो बड़ी खुशी की बात होगी। उस जमाने में बापू थे, लेकिन तब भी मैं उस संस्था में दाखिल नहीं हुआ और मैं समझता हूँ कि आखिर किशोरलालभाई मेरी स्थिति, मेरा तत्त्व-विचार समझ गये थे।

जिसको किसी नये विचार का संशोधन करना है, उसको सबसे प्रथम आवश्यकता तटस्थ बुद्धि की होती है। मनुष्य जब तक किसी भी संस्था का सदस्य बना रहता है, तब तक वह काम तो बहुत कर लेता है, लेकिन विचार-संशोधन के लिए जो मुक्त मन चाहिए, वैसा उसका मन मुक्त नहीं रहता है। आप जानते हैं कि हम नाम अहिंसा का लेते हैं। वह बहुत पुराना विचार है, परन्तु पुराना विचार है तो ऋषियों के व्यक्तिगत जीवन का है।

आज के युग का ब्रह्म—हिंसा

अभी तक लोकनेताओं की जो बहुत सारी ताकत और बुद्धि लगी है, वह हिंसा के विकास में लगी है। सारा का सारा साइंस (विज्ञान) हिंसा की दासी बना हुआ है। हिंसा के असंख्य औजार तैयार किये गये हैं। उसके अलावा हिंसा के लिए अनेक प्रकार के तत्त्वज्ञान भी बनाये गये हैं। पूँजीवाद, साम्यवाद इत्यादि बहुत सारे वाद (इज्म) क्या बता रहे हैं? विशिष्ट विचार समाज पर लादने के वास्ते वे तत्वज्ञान पैदा हुए हैं। इस तरह इधर तो हिंसा के औजारों के लिए बहुत खोज हुई, उधर हिंसा को उठाने वाले तत्त्वज्ञान बनाये गये। उसके अलावा पीनल कोड है, लॉ है, कोर्ट है, सारा का सारा कानून का ढाँचा है, वह सारा क्या करता है? उसका अंतिम शब्द क्या है? जैसे शंकराचार्य से पूछा गया कि आपका अंतिम शब्द क्या है, तो उन्होंने कहा—"ब्रह्म"। वैसे ही आधुनिक समाज से, इन सब कानूनदाँ से पूछा जाय कि तुम्हारा आखिरी शब्द क्या है, तो वे कहेंगे-लॉ ऐन्ड ऑर्डर (कानून और व्यवस्था), याने वह आज के जमाने का 'ब्रह्म' है, आज का 'फाइनल वर्ड', 'लास्ट वर्ड' (अंतिम शब्द) है। उनके पास इससे ऊँचा शब्द नहीं है। कानून और व्यवस्था का मतलब है, अभी तक जो समाज-रचना बनी हुई है, उस रचना में जिनके-जिनके जो अधिकार हैं, वे कायम रह सकें।

आपने आज के अखबार में ईडन का महावाक्य पढ़ा होगा। वे बोले कि "नैतिक शक्ति काफी नहीं, भौतिक शक्ति भी जरूरी है। अभी इंग्लैंड ने मिस्र पर हमला नहीं किया होता, तो यू. एन. ओ. को शांति-स्थापना में देरी होती।" वह पहले से दावा करता आया है और अब भी करता है कि हमने जो कुछ किया है,

> वस्तुस्थिति यह है कि दोनों तरफ से अहिंसा पर प्रत्यक्ष प्रहार हो रहा है। जो अहिंसा में श्रद्धा रखते थे, वे व्यावहारिक कारण से उससे अलग रहते हैं। दूसरे यह कहते हैं कि हम जो कर रहे हैं, वही आज की हालत में अहिंसा का असली रूप है। वे भी अहिंसा पर प्रहार कर रहे हैं। इन दिनों दोनों तरफ से हिंसा को काफी बल मिला है। इसका मुकाबला करना होगा।
>
> धर्मपुरी, ४-८-'५६ —विनोबा

www.vinoba.in

दुनिया में शांति की स्थापना के लिए किया है। वह सतत ऐसा कहेगा। उदार विचार वाला क्रश्चेव भी यही कहता है कि हम हंगरी में जो कर रहे हैं, शांति-स्थापना के लिए ही कर रहे हैं और मिस्र के लिए भी हम वैसा ही करेंगे और करना होगा। उसका भी विश्वास, श्रद्धा किस चीज पर है? हिंसा पर है। अभी तक का जो सारा समाज बना, उसमें दया, प्रेम वगैरा सब है, लेकिन वे सब रक्षक नहीं है, रक्ष्य हैं। आज रक्षकशक्ति हिंसा है। ब्राह्मण तत्त्वज्ञानी है, परंतु वह रक्ष्य है। उसकी रक्षा क्षत्रिय करेगा। गाय अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकती। ब्राह्मण अपनी रक्षा खुद नहीं कर सकता। उसकी रक्षा राजा करेगा। उसके पास ज्ञान बहुत है, परंतु ज्ञान में सामर्थ्य नहीं है, रक्षण-सामर्थ्य तो हिंसा में है, ऐसे विश्वास पर अभी तक का कुल समाज बना है। वह जो महान् परमेश्वर, हिंसा (Violence) है, उसके मातहत बाकी के छोटे-छोटे मालिक रह सकते हैं, उस महान् परमेश्वर के नीचे एक छोटा-सा ईश्वर है। प्रेम, एक छोटा-सा देवता है। करुणा, छोटी-सी देवी है। सहयोग, छोटा-सा देवता है। इस तरह प्रेम करुणा, सहयोग आदि सब छोटे-छोटे देवता, फुटकर देवता हैं, और महादेव है हिंसा।

अहिंसा को हिंसा का स्थान दिलाना है

हम चाहते हैं कि उस हिंसाशक्ति का स्थान अहिंसा ले। अहिंसा को आज के समाज में भी स्थान है। घर-घर में लोग एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, गुरु शिष्यों को पढ़ा रहा है, माता बच्चों की सेवा करती है, अस्पतालों में बीमारों की सेवा चल रही है, छोटे-छोटे प्रेम के काम चल रहे हैं। प्रेम, करुणा आदि इन छोटे-छोटे देवताओं की पहुँच कहाँ तक है? वह जो महादेव हिंसा है, वहाँ तक। जब टोटल वॉर (संकुल युद्ध) शुरू होगी, तब देश के कुल लोगों को सेना में भर्ती होना पड़ेगा। जिन्हें आप दया की मूर्ति मानते हैं, उन बहनों के हाथ में भी बन्दूकें दी जायँगी और स्त्रियों की योग्यता तब मानी जायेगी, जब वे पुरुषों की बराबरी में गोली चलायँगी। यह हालत आज अमेरिका की है, रूस की है, इंग्लैंड की है और हम कहना चाहते हैं कि जब तक हम उस परम देवता (हिंसा) को बदलते नहीं, तब तक हिन्दुस्तान में भी यही हालत रहेगी। आज आप पर कोई आपत्ति आयी नहीं है, इसलिए आप शांत-से दीखते हैं। परंतु मौका आयेगा, तो कुल लोगों को युद्ध के लिए प्रेरणा मिल सकती है। वह राष्ट्रीय कर्तव्य माना जायगा।

अब हम वह स्थान अहिंसा को देना चाहते हैं। आज तक जिस तरह दुनिया के मसले हिंसा से हल करने की कोशिश की गयी, वैसे ही हमें इसके आगे अहिंसा से मसले हल करने की कोशिश करनी चाहिए। तो जितनी निष्ठा, जितनी सेवा, जितनी बुद्धि हिंसा में लगायी जाती थी, उतनी अब अहिंसा में लगानी पड़ेगी। जैसे हिंसा के औजार बनाने में, हिंसा का तत्त्वज्ञान बनाने में और हिंसा की व्यवस्था बनाने में लोगों ने अपना जीवन लगाया था, वैसे ही अहिंसा के औजार, अहिंसा के तत्त्वज्ञान, अहिंसा की व्यवस्था बनाने में हमें अपना जीवन अर्पण करना होगा।

हमारी सारी करुणा, हमारा सारा ज्ञान, बुद्धि आदि सब छोटे-छोटे देवता हैं। माँ बच्चे को समझाने की कोशिश करती है, लेकिन वह नहीं समझता, तो आखिर तमाचा लगाती है। याने उसका आखिरी देवता वह तमाचा है, जिस पर अंतिम विश्वास है। जहाँ प्रेम काम नहीं देगा, जहाँ समझाने की शक्ति काम नहीं देगी, जहाँ वक्तृत्वशक्ति काम नहीं देगी, वहाँ वह परम देवता, वह लाठी काम देगी। यह आज की श्रद्धा है। इस श्रद्धा के बदले हमें अहिंसा की श्रद्धा निर्माण करनी है। इसके लिए खूब संशोधन करना पड़ेगा, ऐसा संशोधन करने वालों पर संस्था का बंधन नहीं चलेगा।

हम मानते हैं कि सरकार के जरिये बहुत सेवा हो सकती है, इसीलिए तो कुछ लोग सरकार में रहते हैं। परंतु सरकार उस देवता को बदल नहीं सकती, उस देवता का स्थान कायम रख कर ही सरकार काम करेगी। जब हमें वह बदलना है, तो हम सबको चिंतन करना होगा और वह चिंतन, सब संस्थाओं से मुक्त हुए बिना नहीं हो सकता।

भूदान के साधन में भी क्रान्ति, साध्य में भी

मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि हमारा काम इतना बुनियादी क्रान्ति का है कि उसमें साधन में भी क्रान्ति है, साध्य में भी क्रान्ति है। कम्युनिस्ट समझते हैं कि उनका ध्येय क्रान्तिकारक है, लेकिन वह नहीं है। क्योंकि उनका देवता वही है, जो पूंजीपतियों का देवता है। परंतु ग्रामदान, भूदान, संपत्तिदान आदि सब जो हैं, वह एक बिलकुल ही क्रान्ति की बात है। लेकिन लोग इस बात को समझते नहीं। अभी आपने सुना कि हमें सात लाख रुपयों का संपत्तिदान मिला, लेकिन बाबा के हाथ में एक पैसा भी नहीं है। कुछ कार्यकर्ताओं के सामने यह सवाल है कि इतना सारा सम्पत्तिदान कैसे वसूल किया जायगा। वे समझते ही नहीं कि वसूल करना हो तो सम्पत्तिदान ही खत्म हो जाता है। फिर तो वह फंड हो जाता है। सम्पत्तिदान में हमें कुछ नहीं करना है। उसका खर्च कौन करेगा, कैसे करेगा, इस सबकी चिंता सम्पत्तिदान देने वाला करेगा। संपत्ति-दान वसूल करने से क्रान्ति नहीं होती है। वसूल करना तो टैक्स कलेक्टर का काम है, बाबा का नहीं। जिसने सम्पत्तिदान दिया, उससे बाबा पूछेगा कि तूने सम्पत्ति-दान का क्या किया? वह कहेगा कि कुछ नहीं किया, गलती हुई, मुआफ़ करना। अगर वह कहेगा कि वह पैसा कहीं खर्च हो गया, तो बाबा उसका दानपत्र फाड़ डालेगा। इसमें बाबा को क्या करना है? यह ध्यान में रखिये कि करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति इकट्ठा करने के लिए बाबा नहीं घूम रहा है। बाबा तो लोकहृदय में परिवर्तन लाने के लिए घूम रहा है।

क्रान्ति का विचार समझाना ही हमारा लक्ष्य

बाबा का काम है, विचार समझाना। बाबा को याद आती है १९३० की बात। उस वक्त बाबा लोगों को सत्याग्रह का विचार समझाने के लिए घूम रहा था। उसी समय नया कानून लागू होने जा रहा था कि १२ साल के नीचे शादियाँ नहीं होनी चाहिए। तो कानून लागू होने के पहले का जो आखिरी दिन था, उस रात बाबा को नींद नहीं आयी, क्योंकि चारों ओर पचासों शादियाँ चल रहीं थीं। उस एक दिन हिन्दुस्तान में लाखों शादियाँ हुईं। इन सबका इंतजाम किसने किया था? लोगों ने शादी करना उचित समझा और उन्होंने तय किया कि शादी करनी है। उसी तरह जब लोग समझेंगे कि अपने पास जमीन रखना याने अपने घर में कन्या रखना है, तब वे स्वयं जाकर वर ढूँढ़ लेंगे और उसे जमीन दे देंगे। तब तक लोगों को यह विचार समझाने के लिए जमीन प्राप्त करना, बाँटना आदि किंडर गार्टन का प्रयोग चलेगा। अगर बाबा दानपत्र हासिल नहीं करता, सम्मति नहीं बनाता, बँटवारा नहीं करता, तो विचार हवा में चला जाता। इसलिए उसे प्रत्यक्ष रूप देने के लिए यह प्रयोग चल रहा है। यह नया विचार जितना फैलेगा, उतना यह काम चौड़ा होगा।

हम एक बहुत ही गूढ़ शक्ति पर विश्वास रख कर काम कर रहे हैं। हम नहीं जानते कि वह शक्ति किस प्रकार से काम करती है, लेकिन हम इसका अनुभव करते हैं। वह काम कर रही है, यह हम देखते हैं। वही शक्ति हमसे काम करवा रही है, हमें घुमा रही है।

जिसके ध्यान में वह चित्र आयेगा कि ऊपर का जो परमेश्वर (हिंसा) है, वह गलत है, हमें उसे बदलना है, वह शख्स दूसरी बात ही नहीं कर सकता है। आज हिन्दुस्तान में ज्यादा से ज्यादा बोलबाला अगर किसी चीज का है, तो पंच-वर्षीय योजना का है। हम जाहिर करना चाहते हैं कि कल अगर विश्वयुद्ध शुरू हो जायेगा, तो कुल पंचवर्षीय योजना खत्म हो जायेगी। लेकिन उस वक्त भी बाबा का भूदान, सम्पत्तिदान चलेगा, क्योंकि लड़ाई के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं, बल्कि बाबा तो यह कहना चाहता है कि उस हालत में भूदान और जोर से चलेगा। बाबा लोगों को समझायेगा कि "चीजों के भाव बहुत बढ़ गये हैं, क्योंकि भाव तुम्हारे देश के हाथ में नहीं, परदेश के हाथ में हैं। अब लड़ाई शुरू हो गयी है, इसलिए भाव चढ़ गये हैं। लेकिन तुम ग्रामोद्योग खड़े करोगे, अपनी जरूरत की चीजें गाँव में ही पैदा करोगे, तो भाव तुम्हारे हाथ में रहेंगे। यह बात ठीक है कि केरोसिन वगैरा के भाव बढ़ेंगे, परंतु अनाज, कपड़ा आदि के भाव अपने हाथ में रख सकते हो—अगर आप तय करेंगे कि हम गाँव में तैयार हुआ कपड़ा ही पहनेंगे।" हम यह भी कहना चाहते हैं कि ऐसे महायुद्ध की सूरत में हिन्दुस्तान टिकने वाला है, तो ग्रामदान और ग्रामराज्य के बल पर ही टिकने वाला है।

हम यह भी कहना चाहते हैं कि आज की हालत में लड़ाई को रोकना किसी भी शख्स के हाथ में नहीं है, क्योंकि आज के जो कूटनीतिज्ञ नेता हैं, वे एक मशीन के पुर्जे हैं। वे सिर्फ चिल्लाते रहते हैं कि लड़ाई नहीं होनी चाहिए, शांति रहनी चाहिए! तो उनके हाथ में सिर्फ चिल्लाना ही रह जाता है। किसी एक मूर्ख के मन में आयेगा और वह किसी देश पर छोटा-सा आक्रमण करेगा, तो लड़ाई शुरू हो जायगी। राजनीतिज्ञों का दिमाग चिढ़ गया, तो एक राजनीतिज्ञ का चिढ़ा हुआ दिमाग सारी दुनिया को आग लगा सकता है और आज का समाज ऐसा है कि हमने अपना भला-बुरा करने की शक्ति चंद लोगों के हाथ में रखी है।

बाबा की सारी लगन इसी में है कि आज हिंसा-देवता को जहाँ खड़ा किया गया है, वहाँ से उसे हटाया जाय। हम आशा करते हैं कि इस तरह का जुनून, पागलपन (Fanaticism) आपमें भी आये।

---

www.vinoba.in

समाज को सर्वार्पण ही सच्चा धर्म

(जयप्रकाश नारायण)

देश में कई सत्तानिष्ठ राजनीतिक दल हैं और मैं भी ऐसे ही एक सत्तानिष्ठ राजनीतिक दल में तथा और किन्हीं कारणों से आज भी कुछ हद तक उस दल से मेरा सम्बन्ध है। हाँ, वह सम्बन्ध अब इसलिए नहीं है कि सत्तानिष्ठ राजनीति में मेरा विश्वास है। और इसलिए यह सम्बन्ध भी अब अधिक आगे नहीं चल सकता।

सत्ता द्वारा देश का निर्माण असम्भव

महात्मा गांधी आध्यात्मिक पुरुष ही थे, किन्तु गुलामों का कोई धर्म नहीं होता, इसलिए गुलामी दूर करके वे देश का नव-निर्माण करना चाहते थे और इसी-लिए परिस्थितिवश उन्हें राजनीति में आना पड़ा। गांधीजी का विश्वास था कि सत्ता के द्वारा देश का निर्माण नहीं हो सकता। ज़ाहिर है कि सत्ता के द्वारा निर्माण का काम होना संभव होता, तो स्वराज्य-प्राप्ति के बाद देश के प्रथम प्रधान मंत्री स्वयं महात्मा गांधी ही बने होते। अमेरिका और रूस में क्रान्तियाँ हुईं और क्रान्तियों के बाद उनके नेता जॉर्ज वाशिंगटन और लेनिन ने सत्ताएँ सँभालीं। किन्तु महात्मा गांधी ने स्वयं सत्ता नहीं ली। इतना ही नहीं, वे यह भी चाहते थे कि सत्ता चलाने का भार दूसरों पर सौंप कर काँग्रेस की पूरी संस्था ही लोकसेवक-संघ के रूप में बदल जाय। गांधीजी का दृढ़ विश्वास था कि देश के नव-निर्माण का काम सेवा के मार्ग से ही हो सकता है, सत्ता के मार्ग से नहीं। इसलिए मैंने सत्तानिष्ठ राजनीति को छोड़ कर सेवा का मार्ग ही अपने लिए चुना है।

व्यावहारिक धर्म की आवश्यकता

केदारनाथ हिन्दुओं का तीर्थ-स्थान है। धर्म-भावना से ही हर साल लाखों आदम उसके दर्शन के लिए यहाँ आते हैं। हरिजन और सवर्ण के भेदभाव यहाँ टिके हुए हैं, इससे केवल मन्दिरों के दर्शन करने के लिए ही इतनी दूर आना मुझे पसन्द नहीं है। भगवान् सब जगह हैं। जो भगवान् इस मंदिर के पत्थर में हैं, कण-कण में हैं वही गरीब और अमीर, सवर्ण और हरिजन सबके दिल में है। और फिर जहाँ मंदिर में पत्थर के भगवान् को तो भोग चढ़े, वहाँ मन्दिर के पास ही भूखे पड़े हुए मनुष्य को, जीते जागते भगवान् स्वरूप को उसके मांगने पर भी खाने को कुछ न दिया जाय, तो मैं उसे धर्म नहीं मानता। वह अन्याय है, अधर्म है। जिस धर्म का व्यावहारिक जीवन से कोई सम्बन्ध न हो, जो धर्म जीवन को ऊँचा उठाने में मदद नहीं करता, वह धर्म नहीं, अधर्म है। वह टिक नहीं सकता।

देवघर की हृदयद्रावक घटना

देवघर में एक मन्दिर है। उसमें भी शिव की ही मूर्ति है। विनोबाजी को वहाँ आने का निमंत्रण दिया गया। जब विनोबाजी मन्दिर में पहुँचे, तो मंदिर के पंडे-पुजारियों ने उन्हें घेर लिया। धक्कमधुक्की शुरू हुई। विनोबाजी पर प्रहार किया गया। उनके साथियों ने चारों ओर घेरा डाल लिया था, इसलिए विनोबाजी को तो अधिक चोट नहीं लगी, किन्तु उनकी रक्षा में लगी हुई लड़कियों को खूब चोट आयी। क्या यह धर्म है ?

विनोबा द्वारा मानव-धर्म का प्रचार

आपका देश बुद्ध का देश है, शंकराचार्य का देश है, महात्मा गांधी का देश है। इन्हीं महान् आत्माओं ने देश को ऊँचा उठाया है। महात्मा गांधी को हम सब जानते हैं। वे एक उच्च कोटि के महात्मा थे। अपने देश में अंग्रेजों का राज्य था। अंग्रेजी राज्य से मुक्त कराने के लिए उन्होंने लड़ाइयाँ लड़ीं। किन्तु कैसे विचित्र पुरुष थे वे कि उन्होंने अंग्रेजों की हत्या नहीं की। अपने मन में भी उन्होंने अंग्रेजों से कभी द्वेष नहीं रखा। वे उन्हें बराबर प्यार ही करते रहे। आज हमारे देश को और दुनिया को इसलिए ऐसे ही धर्म की जरूरत है, जिसमें प्रत्येक मानव मानव से प्रेम करे। महात्मा गांधी के बाद विनोबाजी आज भूदान के जरिये उसी धर्म का, मानव-धर्म का प्रचार कर रहे हैं। विनोबाजी एक उच्च कुल के महाराष्ट्रीय ब्राह्मण हैं। वेद-उपनिषद आदि समस्त शास्त्रों के प्रकांड धर्म के जानने वाले उच्च कोटि के विद्वान और साधक हैं। उनको न कोई बाल बच्चा है, न घर-द्वार। वे केवल इसी धर्म-विचार को सुनाते हुए घूम रहे हैं। भूदान एक धर्म-विचार ही है, वेदान्त का विचार ही है। भूदान के इस धर्म-सन्देश को फैलाने के लिए ही मैं यहाँ आया हूँ।

धर्म के नाम पर युद्ध

दुनिया में हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध और ईसाई, ये चार बड़े धर्म आज माने जाते हैं। बड़े इसलिए कि दुनिया में करोड़ों लोग इन धर्मों को मानते हैं। और भी अनेक छोटे-छोटे धर्म हैं। इस देश में और दूसरे देशों में भी इन धर्मों को लेकर कितने ही संघर्ष हुए हैं। चारों ओर 'धर्म', 'धर्म' की ही आवाजें सुनायी पड़ती हैं, किन्तु फिर भी मनुष्य का पतन ही हो रहा है, समाज ऊँचा नहीं उठ रहा है। क्यों ? इसलिए कि धर्म का व्यावहारिक जीवन से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। वेदान्त कहता सबमें एक ही आत्मा है, किन्तु फिर भी जैसे धन-दौलत ने छोटे-बड़े के भेद बना दिये हैं, उसी तरह धर्म ने भी छोटे-बड़े के भेद पैदा कर दिये हैं। इन्हीं भेदों के कारण युद्ध होते हैं।

मानव का परिवर्तन आवश्यक

इस युद्ध-परम्परा का अन्तिम परिणाम क्या होगा ? महाभारत के पहले और बाद में भी युद्ध हुए, किन्तु इन युद्धों में कुछ लोग बच जाते थे और दुनिया चलती रहती थी। अब तो विज्ञान ने हाइड्रोजन बम मनुष्य के हाथ में दे दिया है। एक बम गिरता है, तो सैकड़ों मील तक बर-बादी कर देता है। फिर उससे जो जहरीले तत्त्व निकलते हैं, वे सारे वायुमंडल को विषाक्त (Rādio active) कर देते हैं, जिसके कारण साँस लेने से ही लोग मर जाते हैं, अथवा कुछ ऐसे भयानक विष उनके अन्दर प्रवेश कर जाते हैं कि सारे शरीर में बड़े-बड़े फोड़े हो जाते हैं, जो कभी अच्छे ही नहीं होते। तो यदि अब युद्ध होगा, तो संसार में प्रलय ही हो जायगा। एक भी मनुष्य जिंदा नहीं बचेगा—कुछ साँप, बिच्छू, बन्दर, भालू बच जायँ, तो भले ही बच जायँ। आज मनुष्य मनुष्य का खून चूस रहा है, मनुष्य मनुष्य का शोषण कर रहा है, मनुष्य ही मनुष्य की पीड़ाओं का सबसे बड़ा कारण बना हुआ है। यदि मनुष्य ऐसा ही रहने वाला है, तो इससे तो कहीं अच्छा होगा कि बम गिरें, प्रलय हो जाय और एक भी आदमी जिन्दा न रहे।

सब परस्पर प्रेम करें

जरा सोचिये तो कि जब मनुष्य ही नहीं रहेगा, तो आपके इस मंदिर में कौन आयेगा ? आप सारे लोग धर्म को जानने वाले हैं, विद्वान हैं। आप लोग सोचें, विचार करें और कोई ऐसा रास्ता निकालें, ऐसा धर्म बनायें, जिससे लोग एक-दूसरे को प्यार करें, एक-दूसरे की सेवा करें, एक-दूसरे को बाँट कर खायँ। अमेरिका रूस, जर्मनी, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से कहे कि भाइयो, हमारे पास जो कुछ

एक बनेंगे, नेक बनेंगे

गाते जाना, गाते जाना, सर्वोदय का गाना।
मिल के बैठें, मिल के सोचें, मिल के खायें खाना ॥

देश की दौलत में है सबको हिस्सेदार बनाना।
ऊँच-नीच का भेद मिटा कर सबको साथ मिलाना ॥
सुख में दुख में एक रहेंगे, सबमें प्रेम जगाना ॥ गाते०

धरती तो है सबकी माता-सबके प्राण बचाये।
धरती उसकी, जिसने सूरज पानी, चाँद बनाये ॥
'तेरी धरती', 'मेरी धरती,' यह अज्ञान मिटाना ॥ गाते०

हाथ दिये मेहनत करने को, मिलजुल काम चलाना।
बिन मेहनत खाने की जो है आदत उसे मिटाना ॥
'मैं मालिक हूँ', 'वह नौकर है', यह है भेद मिटाना ॥ गाते०

गाँव की सारी धरती को है गाँव के नाम चढ़ाना।
घर घर में है चक्की, चरखा, ग्रामोद्योग चलाना ॥
रोटी-कपड़ा खूब मिलेगा, होगा खूब कमाना ॥ गाते०

गाँव के बच्चे, मेरे बच्चे, ऐसा भाव जगाना।
'मेरा-तेरा' तोड़ के बंधन, सबको गले लगाना ॥

एक बनेगें, नेक बनेंगे मिलजुल प्रेम बढ़ाना।
गाते जाना, गाते जाना, सर्वोदय का गाना ॥

हिसार —परमानन्द, भवनेश

www.vinoba.in

है, वह सबका है, आओ, सब बाँट कर खायँ। इसी तरह रूस भी अमेरिका और दूसरे मुल्कों से कहे कि आओ, हमारे पास जो कुछ है, वह सबका है। आपको भी सोचना चाहिए कि आप लोगों के पास भी जो कुछ है, वह आपका नहीं है, सबका है, पूरे समाज का है या फिर इन केदारनाथ भगवान् का है।

समाजाय इदं, न मम्

आज हमारा हृदय संकुचित हो गया है। अपने बाल-बच्चों और परिवार की सीमा में ही हमने अपने को बाँध लिया है। हमें रोटी मिलती रहे, बस इतने से ही हमारा मतलब है। हमारा पड़ोसी भूखा मर रहा है, तो वह जाने। ग़रीब हो या अमीर, सवर्ण हो या हरिजन, सब स्वार्थ में डूबे हुए हैं। सबको अपने-अपने स्वार्थ सिद्ध करने की पड़ी हुई है। इसीलिए सारे झगड़े और सारे भेद आ खड़े होते हैं। हम सोचते नहीं कि हमारे पास जो कुछ है, वह सब समाज की मदद से ही मिला है। जंगल में कुछ प्राणी ऐसे होते होंगे, जो जन्म लेते ही समाज से अलग हो जाते हों और फिर भी जिन्दा रहते हों, मनुष्य तो जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज के सहारे ही रहता है। उसको जो भाषा मिली है, वह तक तो समाज की बदौलत मिली है। यदि समाज न होता, तो मनुष्य की कोई भाषा ही नहीं होती। हमारे पास जो कुछ भी है—ज़मीन, धन, विद्या, शरीर, बल इत्यादि वह सब समाज की सहायता से ही हमें मिला है। इसलिए हमारे पास जो कुछ भी है, वह सब समाज का है, यही मान कर हमें चलना चाहिए। हमारे पास जो कुछ भी है, वह सबका है और इसलिए सब मिल कर उसका उपयोग करें, यही सच्चा धर्म है, यही सच्चा दर्शन है और यही सच्चा वेदान्त है।*

* बदरी-केदार-यात्रा में केदारनाथ मंदिर के सामने किया हुआ भाषण।

संपत्ति-संग्रह की वृत्ति

(विनोबा)

मनुष्य में संपत्ति-संग्रह की वृत्ति स्वाभाविक नहीं है। मनुष्य अपने दुःख-सुख बाँट कर भोगना चाहता है। निजी संपत्ति की जो भावना लोगों के मन में उत्पन्न हो गयी है, वह आज की समाज-रचना और कानूनों के कारण है। आजकल के कानून कहते हैं कि निजी संपत्ति ऐसी पवित्र वस्तु है कि उसके साथ दूसरों को छेड़-छाड़ नहीं करनी चाहिए। लेकिन मैं पूछता हूँ कि ऐसी संपत्ति रख कर यदि कोई समाज से अलग हो जाता है, तो उससे क्या लाभ? समुद्र में रहने पर जल की एक बूंद का नाम भी समुद्र ही है, किंतु यदि हम उसे अलग कर दें, तो उसकी संज्ञा समुद्र न होकर जल की एक बूंद हो जायगी। इसी प्रकार समाज में विलीन रह कर प्रत्येक व्यक्ति संपूर्ण समाज का प्रतीक होता है। मनुष्य ज्यादा पढ़-लिख लेता है, तो वह तीन-पाँच के प्रपंच में ज्यादा पड़ जाता है। कम पढ़े-लिखे लोगों में सामाजिकता अधिक पायी जाती है। इसलिए पढ़े-लिखे लोगों को अपने अन्दर यह गुण उत्पन्न करने के लिए अपनी उस शिक्षा को धो डालना चाहिए। उड़ीसा के लोग ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं, इसलिए उनके सामने ऐसा कोई सवाल नहीं पैदा होता। यही वजह है कि वे सामूहिक स्वामित्व की बात बहुत जल्द समझ सके। उड़ीसा के गाँव भी छोटे-छोटे हैं। यही बात दुनिया के बहुत से हिस्सों के बारे में कही जा सकती है—अगर लोग कुछ ही दिनों से मन में जमी हुई यह बात निकाल फेंकें। मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति सामाजिकता की है। आमोद-प्रमोद के उसके सभी साधन सामाजिक होते हैं। हम अपनी बातें, अपने विचार छिपा कर नहीं रखना चाहते। दूसरों के साथ उन्हें बाँट कर हम आनंदित होते हैं। आनंद की अवस्था मन में छिपा कर नहीं रखी जा सकती, वह तो बाहर आना ही चाहती है। इसीलिए ग्रामदान जैसी बात के स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं, वह तो स्वयं स्पष्ट है। इसमें कोई चमत्कार की बात नहीं। यह मनुष्य-स्वभाव के प्रतिकूल है ही नहीं। यह अमेरिका और इंग्लैण्ड जैसे अधिक विकसित देशों में भी हो सकता है। विज्ञान के युग में तो यह और भी संभव है, क्योंकि विज्ञान लोगों को ज्यादा से ज्यादा नजदीक ले आ रहा है। मनुष्य अपने को समाज से अलग नहीं रख सकता। राष्ट्रवाद ने व्यक्तिवाद की जगह ले ली है; लेकिन यह राष्ट्रवाद भी आगे चल कर व्यक्तिवाद की तरह ही हो सकता है। पश्चिम के देश इस बात के लिए प्रयत्न कर रहे हैं कि राष्ट्रवाद का पर्यवसान सामूहिकता अथवा आन्तर्राष्ट्रीयता में हो जाय। जहाँ उन्होंने यह समस्या हल कर ली, पार्थक्य की सारी भावना पूरी तरह से मिट जायगी।

(तिरुपुर, १८-१०-'५६)

शंका-समाधान :

सचेतन उदासीनता और असहयोग

प्रश्न : २ नवम्बर के "भूदान-यज्ञ" (पृष्ठ ७) में आपने उदासीनता को असहयोग का "सौम्यतर तथा शक्तिशाली रूप" बताया है। असहयोग की बात तो समझ में आती है, उसमें एक सक्रिय कार्यक्रम रहता है। पुरुषार्थ की गुंजाइश रहती है। उदासीनता तो निष्क्रिय भावना है, उसमें मनुष्य का पुरुषार्थ निखरता नहीं। इससे वह तो फलवती ही नहीं होगी, शक्तिशाली तो होना दूर रहा। क्या इस प्रकार के प्रचार से देश के लोग पुरुषत्वहीन नहीं हो जायेंगे?

उत्तर : अगर आप मेरी प्रश्नोत्तरी को ध्यान से पढ़ेंगे, तो मालूम होगा कि मैंने समझ-बूझ कर उदासीनता के साथ "सचेतन" शब्द जोड़ा है। उदासीनता ठीक उसी तरह से जड़ और चेतन, दोनों हो सकती है, जिस तरह असहयोग भी जड़ और चेतन, दोनों हो सकता है। चूँकि गांधीजी ने चेतन असहयोग का संगठन किया और हमने उसको देख लिया, इसलिए उसकी सक्रियता समझ में आती है। लेकिन शुरू में बड़े-बड़े विचारकों ने भी गांधीजी के असहयोग को ठीक उसी तरह निष्क्रिय तथा नकारात्मक समझा था, जैसे आप उदासीनता को समझते हैं।

इतना तो आप समझते ही हैं कि अहिंसक क्रांति, निर्विरोध भावना के विकास से ही हो सकती है। आप जब असहयोग की बात सोचते हैं, तो उसमें परोक्ष रूप में विरोध की भावना आ जाती है। लेकिन उदासीनता में उतना भी विरोध नहीं आ पाता। इसलिए मैंने कहा कि आजादी जैसी छोटी चीज के लिए असहयोग से काम चल सकता था, लेकिन अब अधिक शक्तिशाली असहयोग के लिए अधिक निर्विरोध रूप चाहिए। फिर हम जिससे असहयोग करते हैं, उसकी महत्ता को तसलीम करते हैं, लेकिन जिस चीज से हम उदासीन रहते हैं, उसकी महत्ता को ही हम इन्कार कर देते हैं। अगर शासन के अस्तित्व को हम महत्त्व की वस्तु मान लेते हैं, तो हमारी निष्ठा उसके विघटन में कम पड़ जाती है। अगर मान लेते हैं कि स्वतंत्र लोकशक्ति ही सब कुछ है, तो हमें अपनी सर्वांगीण दृष्टि तथा शक्ति उसी के संगठन तथा समाज-व्यवस्था में उसका उपयोग करने में लगाने की आवश्यकता है। फिर मौजूदा राज्यशक्ति के प्रति उदासीनता सहज ही आ जाती है।

उदासीनता से यह मतलब नहीं है कि चुपचाप घर बैठे रहें। हमें **सक्रिय उदासीन बनना है। अर्थात् हम जनता में उदासीनता की भावना का प्रचार तथा संगठन करना है, ताकि स्वतंत्र लोकशक्ति, राज्यशक्ति के प्रति उदासीन रहते हुए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा व्यवस्था करके नित्य जीवन में राज्य के अस्तित्व को ही भूल सकें।** यह एक विचार है, जिसके सक्रिय कार्यक्रम से शोध करने की आवश्यकता है। वस्तुतः आज के बहुसंख्यक विचारक शासनहीन राज्यमुक्त समाज का विचार रखते हैं। वे इस विचार को मानते हैं कि राज्य-संस्था अंत में सूख (wither away) जायेगी, लेकिन प्रश्न यह है कि वह हो कैसे?

जब तक मनुष्य के मानस में कोई वस्तु भरपूर रहती है, तब तक वह चीज लोक-समाज में सूख नहीं सकती। मनुष्य का मन तथा दिमाग ही मुख्य वस्तु होता है। जिसके दिमाग में पीपल के पेड़ पर भूत रहता है, उसके लिए उस पेड़ पर वास्तविक भूत भी रहता है, और वह उसे प्रत्यक्ष भी करता है। जो चीज नहीं है, वह दिमाग में आते ही प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हो जाती है, तब जो चीज है, उसे सुखाने के लिए क्या यह आवश्यक नहीं है कि हम पहले उसे दिमाग से ही सुखा डालें और समाज का काम उससे उदासीन रह कर ही चले, ऐसा प्रयास करें?

केवल असहयोग से अन्याय का प्रतिकार तो होता है, लेकिन समाज की पुरानी शक्ति के स्थान पर नवशक्ति का निर्माण मुश्किल है, क्योंकि असहयोग करने वाली जनता की सारी शक्ति उसी कार्यक्रम में लग जाती है और उसमें रचनात्मक प्रवृत्ति की गुंजाइश कम रहती है। जहाँ असहयोग का कार्य खुद ही एक कार्यक्रय है, वहाँ उदासीनता अपने आप कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं है, जिससे जनता की शक्ति उसी में खर्च हो; बल्कि उससे जनता का सारा ध्यान दूसरी ओर से खिंच कर विशिष्ट शक्ति के निर्माण में लग जाता है। इस तरह सक्रिय उदासीनता सृजनात्मक कार्यक्रम होती है, क्योंकि वह राज्य-शक्ति की तरफ उदासीन रह कर पूरी ताकत प्रत्यक्ष जनशक्ति के निर्माण तथा उसके व्यवस्थित उपयोग में लगा देती है। अतएव आपकी जो शंका है कि उदासीनता के कार्यक्रम से देश के लोग पुरुषत्वहीन हो जायँगे, वह निर्मूल है।

—धीरेन्द्र मजूमदार

श्रम-भारती, खादीग्राम, ८, नवम्बर '५६

www.vinoba.in

ग्रामधर्म के तीन सूत्र

(विनोबा)

यह ग्राम बड़ा सुंदर दिखता है। बहुत से गाँव गंदे होते हैं। अगर गाँव गंदे रहे, तो गाँव के लोग नरक में ही रहते हैं। लोग समझते हैं कि हम मरने के बाद स्वर्ग या नरक में जाते हैं। मरने के बाद तो दोनों में से एक मिलेगा ही, परंतु मरने के पहले भी मिल सकता है। हम गाँव-गाँव जाते हैं, तो कई गाँवों में नाक बंद करके ही प्रवेश करना पड़ता है, क्योंकि लोग गाँव के बाहर खुले में पाखाना करते हैं। सब बदबू हवा में फैलती है और उससे बीमारी फैलती है। मल पर मक्खियाँ बैठती हैं और फिर वही मक्खियाँ खाने की चीजों पर भी बैठती हैं। वही खाना जब हम खाते हैं, तो उससे बीमारी होती है। इसीका नाम नरक है। यह नरक हमने ही पैदा किया है। इसी दुनिया में, इसी जिंदगी में हमने नरक पैदा किया। ऐसे नरक में जो लोग अपना जीवन बिताते हैं, उनको मरने के बाद भगवान् स्वर्ग कैसे भेजेगा? वह कहेगा कि यह नरक का ही प्राणी है, इसलिए इसको नरक में ही भेजना चाहिए।

मैले को ढँकना जरूरी है

कहीं-कहीं लोग रोज स्नान करते हैं, भस्म लगाते हैं, हाथ-पाँव दो-दो, चार-चार बार साबुन से धोते हैं, छूआछूत मानते हैं—उसको छूते हैं, जो इसको नही छूते हैं। परंतु जिस खाने पर मक्खियाँ बैठती हैं, उसको खाते ही हैं! मनुष्य के मैले का अच्छा उपयोग हो सकता है। खेत में एक खुरपा लेकर जाना चाहिए। वहाँ एक गड्ढा बनाना चाहिए। उस पर पाखाने के लिए बैठना चाहिए। बाद में उस पर मिट्टी और घासफूस डाल देना चाहिए। इतना करोगे, तो बदबू नहीं फैलेगी, मक्खियाँ नहीं बैठेंगी और बीमारी भी नहीं होगी। इसके अलावा उससे सुंदर खाद भी बनेगी, तो फसल अच्छी होगी। मनुष्य के मैले की बदबू आती है, क्योंकि उसके बारीक परमाणु नाक में जाकर बैठते हैं और नाक को बदबू का पता चल जाता है। इसी तरह कान, आँख और मुँह में भी ये परमाणु जाते ही हैं। परंतु उनको पता नहीं चलता, क्योंकि उनमें सूँघने की शक्ति नहीं है। इसलिए मैले को ढँकना ही चाहिए। यदि ढँकेंगे, तो हानि टलेगी और लाभ होगा।

चीन और जापान में मनुष्य के मैले का खाद में बहुत अच्छा उपयोग करते हैं। साल भर में उससे एक मनुष्य के पीछे छह रुपयों की फसल बढ़ेगी। अगर मनुष्य के मलमूत्र का अच्छा उपयोग होगा, तो यदि किसी गाँव में पाँच सौ मनुष्य हैं, तो तीन हजार रुपयों की फसल बढेगी। आज तो तीन हजार रुपये की बीमारी पैदा की जाती है। बीमारी बढ़ती है, तो पैसे भी जाते हैं और शरीर का भी क्षय होता है। इसलिए गाँव में स्वच्छता खूब होनी चाहिए।

हमने एक गाँव में डेढ़ साल तक यह काम किया है। लोग रोज मैला करते थे और हम उठाते थे। हम हाथ में फावड़ा और लोहे का गमला लेकर जाते थे। डेढ़ साल तक हमने यह काम किया। बाद में लोग मिट्टी डालने लगे। सबको मिट्टी डालनी चाहिए, तभी गाँव की दौलत और अकल बढ़ेगी।

कच्चे माल का पक्का माल गाँव में ही हो

हम हिंदुस्तान के लोग स्नान किये बिना प्रतिदिन भोजन नहीं करते—चाहे चार लोटे पानी से ही स्नान करें, पर स्नान जरूर करना चाहिए। अगर गाँव में पानी न हो, तो सबको मिल कर इंतजाम करना चाहिए। कपड़े तो लोग कई पहन लेते हैं। उससे पसीना ज्यादा छूटता है। उस पर अगर स्नान न किया जाय, तो काम नहीं चल सकता है। यदि दिन में खुले बदन रहते हैं, तो शरीर पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं और उससे शरीर अच्छा रहता है। आपको स्नान के लिए तो पानी नहीं मिलता है, लेकिन लोग बालों में तेल डालते ही हैं और उसके लिए बाहर से तेल भी मँगाते हैं, जिसमें बहुत-सी बुराइयाँ होती हैं। उससे बाल जल्दी पक जाते हैं और सौंदर्य के बदले कुरूपता आती है। अगर बालों में तेल डालना है, तो गाँव में तैयार होने वाला ही तेल डालना चाहिए। गाँव के कच्चे माल का पक्का माल गाँव में ही तैयार होना चाहिए। गाँव की उपयोग के चीज़ें गाँव में ही तैयार होनी चाहिए। अगर हम बाहर से मँगाते हैं, तो गाँव के उद्योग टिकते नहीं और गाँव की लक्ष्मी बाहर चली जाती है।

गाँव में स्वच्छता रखोगे, तो गाँव में धर्म रहेगा। जिस गाँव में स्वच्छता होगी, वहाँ सरस्वती बसेगी। जहाँ गंदगी होती है, वहाँ विद्या आती ही नहीं। सरस्वती का आसन श्वेत कमल है। वह मैले स्थान में कभी नहीं बैठती। गाँव में उद्योग अगर नहीं चलते हैं और सब चीजें बाहर से मँगायी जाती हैं, तो आपकी लक्ष्मी आपके गाँव में नहीं रहेगी। आपके गाँव की जमीन अगर चंद लोगों के हाथ में रही और बाकी लोगों को पूरा खाना भी नहीं मिला, तो गाँव की शक्ति भी नहीं रहेगी। इसलिए अगर आप गाँव में सरस्वती, लक्ष्मी और शक्ति, तीनों को रखना चाहते हों, तो आपको गाँव में स्वच्छता रखनी होगी, गाँव के उद्योग बढ़ाने होंगे, अपने उपयोग की चीजें खुद तैयार करनी होंगी और गाँव की जमीन सबमें बाँटनी होगी। जमीन का मालिक परमेश्वर हैं। अगर ये तीन काम करेंगे, तो सरस्वती, लक्ष्मी और शक्ति आपके गाँव में बसेगी।

(पोन्नकलीवलसु, कोइंबतूर, २-११-५६)

यंत्रयुग में भी बैलगाड़ी

(गोपाल कृष्ण मल्लिक)

लोकसभा की इस वर्षाकालीन बैठक के अंत में बैलगाड़ी की महत्ता और आवश्यकता पर श्री फिरोज गांधी ने जो महत्त्व का बयान दिया, उस ओर यदि हमारी भारत सरकार की आँखें जायँ, तो न सिर्फ बैलगाड़ी और उसमें जुतने वाले बैलों का सुधार होगा, वरन् हिंदुस्तान के आर्थिक संतुलन की भी अभिवृद्धि होगी।

भारत-सरकार रेलों और मालगाड़ियों को बनाने तथा बढ़ाने में तरक्की ही करती रही है; तब भी माल ढोने के लिए बैलगाड़ी की जरूरत बढ़ती जाती है। फिरोज गांधी ने ठीक ही कहा—"हमारे देश में आज भी बैलगाड़ियों से जितना माल ढोया जाता है, वह रेल और मालगाड़ियों से ढोये जाने वाले माल से कहीं अधिक है। इसलिए मालगाड़ी की वृद्धि पर जितना ध्यान देने की जरूरत है, बैलगाड़ी के सुधार किये जाने की जरूरत भी उससे कम नहीं है।" पता नहीं, भारत-सरकार इस सम्बन्ध में अब भी कोई कदम उठायेगी या नहीं।

बैलगाड़ियों की संख्या लगातार बढ़ी है जब, कि इसे गिराने वाले उपकरणों की वृद्धि होती जा रही है। सन् १९४५ में वह ८४,८०,०००थी, जो सन् १९५१ में ९८,६०,००० हो गयी। ये आँकड़े इन दो वर्षों के पालतू पशुओं के आँकड़ों के अनुसार हैं। केवल हिमाचल प्रदेश में ही बैलगाड़ियों की संख्या में १८१·३ प्रतिशत की वृद्धि हुई। यह इस बात का सबूत है कि भारत की आर्थिक-व्यवस्था में बैलगाड़ी का अब भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राप्त आँकड़ों के अनुसार सन् १९४३ में बैलगाड़ियों ने १० करोड़ टन माल ढोया, जो लगभग उसी वर्ष रेलों द्वारा ढोये गये कुल माल के बराबर था।

लेकिन बैलगाड़ी परिवहन का ही एकमात्र साधन नहीं है, बल्कि उससे करोड़ों किसानों तथा खातियों को, लुहारों और बढ़इयों को भी रोजगार मिलता है। करोड़ों भारतीय इस पर माल ढोकर अपनी जीविका चलाते हैं। लेकिन सवाल यह है कि इनकी जीविका भी उस हालत में कैसे चलेगी, जब कि सुदूर गाँव तक भी हम ट्रैक्टर तथा ट्रक ही ले जाना पसन्द करेंगे। मनुष्य को जीने देने की ओर हमारा ध्यान नहीं है। अपनी श्रीवृद्धि, आफियत और आराम की ही सबकी दृष्टि है। यंत्र के मोह की जड़ भी यहीं है।

सूई के बाद सिलाई की मशीन की, हल के बाद ट्रैक्टर की, तकली तथा चरखे के तकुए के बाद वाष्पचालित कपड़े की मशीन की तरह ही धुरी तथा पहियेवाली बैलगाड़ी के बाद ही वाष्प या तेलचालित गाड़ियों की ईजाद हुई है। लेकिन विज्ञान इतना बढ़ जाने पर भी सूई, हल, तकली और चरखे का तकुआ और बैलगाड़ी का महत्त्व तथा उसकी आवश्यकता वैसी ही बनी है। खेद की बात है कि जब बैलगाड़ी की इतनी आवश्यकता है, तब भी उसका स्तर वैसा ही पड़ा है! अब अ. भा. खादी और ग्रामोद्योग-मंडल ने बैलगाड़ी-उद्योग की समस्याओं और उसका स्तर सुधारने की दिशा में ध्यान देना शुरू किया है। एक नये प्रकार का पहिया बनाया गया है, जिसका किनारा तो चौड़ा है, लेकिन व्यास कम है। सोचने की बात है कि बैलगाड़ी जैसे भारत की अर्थ-व्यवस्था के एक मुख्य आधार की, जो करोड़ों भारतीयों को जीविका और रोजगार भी देती है, कब तक उपेक्षा करना न्यायसंगत है।

---

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ
२३ नवंबर सन् १९५६

अेकाग्रता का अुत्तम साधन : चरखा

(वीनोबा)

हमने आश्रम में बहुत दफा देखा है की सूत कातते समय छोटे लड़के बीलकुल अेकाग्र हो जाते थे। यह ठीक है की बच्चों में वह शक्ती नहीं है की वे घंटों तक ध्यान लगा कर बैठें, परंतु थोड़ी देर के लीअे वे अीतने अेकाग्र हो जाते हैं की मानों समाधी में ही डूबे हों। भक्त लोग ध्यान के लीअे अैसी-ही युक्ती करते हैं। भगवान् की मूर्ती पर पानी का बूंद-बूंद अभीषेक चलता है, अुसके सामने बैठ कर वे ध्यान करते हैं। कोअी अखंड शांत गती हो, तो अुसे देख कर चीत्त अेकाग्र हो जाता है। मंदीर में छोटा-सा दीपक जलाते हैं, जो प्रकाश के लीअे नहीं, ध्यान के लीअे होता है। अुसके सामने बैठ कर चीत्त अेकाग्र होता है। अुसी तरह कोअी स्वच्छ नीर्मल झरना धीरे-धीरे बहता हो, तो अुसे देख कर चीत्त प्रसन्न और शांत हो जाता है। वीणा की तन् तन् तन् धीमी आवाज सुन कर चीत्त अेकाग्र होता है। जोरों से घंटी बजेगी, तो चीत्त अेकाग्र नहीं होगा। अीसका मतलब है की कोअी सौम्य शांतीमय क्रीया अखंड चलती हो, तो अुसे देख कर चीत्त अेकाग्र होता है।

योगी ध्यान करते हैं, याने श्वास बाहर छोड़ना और अंदर लेने की क्रीया धीरे-धीरे करते हैं। अैसी कोअी शांत सौम्य क्रीया अखंड चलती हो, तो अुसके आधार से चीत्त अेकाग्र होता है और अुससे शांती मीलती है। अगर वह क्रीया अैसी हो की जीससे कुछ अुत्पादन होता हो, तो अुससे दोनों लाभ होते हैं। मील में काम चलता है, अुसमें धड़-धड़ आवाज होती है, अीसलीअे वहां चीत्त अेकाग्र नहीं हो सकता है। परंतु चरखे की आवाज अीतनी रमणीय है की अुस आवाज से ही मन शांत हो जाता है। घर में माता सूत कातती हो, तो बच्चे को अुस धीमी आवाज से नींद आयेगी। अैसी कोअी शांत क्रीया चाहीअे, जीससे कुछ अुत्पादन होता हो। अगर मनुष्य को गुस्सा आया और वह चरखा लेकर बैठा, तो अुसका गुस्सा भी कम होगा। मनुष्य को दुःख हुआ, भाअी मर गया, कुछ सूझता नहीं, तो वह चरखा लेकर बैठ गया, तो अीधर नाम-स्मरण चलता रहा और अुधर चरखा चलता रहा, तो वह दुःख भूल जाता है। नाम-स्मरण के लीअे अक्सर मणीमाला हाथ में लेकर अेक-अेक मणी घुमाते हैं। अीसका मतलब यह है की अेकाग्रता के लीअे कोअी छोटी-सी क्रीया चाहीअे।

(मेटुपालेयम्, कोअींबतूर, ३०-१०-'५६)

सर्वोदय की दृष्टि :

स्वावलंबी अर्थनीति कैसे बनेगी ?

मनुष्य के इतिहास की मीमांसा करने वाले विचारकों ने एक बात बार-बार कही है कि लड़ाइयाँ सरकारें करती हैं। किसी देश की जनता लड़ाई करना पसंद नहीं करती। दुश्मनी राज्यों में होती है, राष्ट्रों में नहीं। इसलिए वे कहा करते थे कि राज्यनीति अलग है, राष्ट्रनीति अलग है। राज्यनीति में अपनी हुकूमत का दायरा बढ़ाने की कोशिश होती है। राष्ट्रनीति में जनता को सुखी और शांतिपरायण बनाने की कोशिश होती है। समाजवादी और साम्यवादी इतिहासवेत्ता कहते हैं कि आज तक जितने युद्ध हुए, वे राज्यवादी और साम्राज्यवादी युद्ध थे। केवल १९३९ में जो दूसरा जागतिक युद्ध शुरू हुआ, वह आगे चल कर लोकयुद्ध बन गया। दूसरा जागतिक महायुद्ध सचमुच लोकयुद्ध था या नहीं था, इसकी चर्चा करने में हमें कोई रुचि नहीं है। लेकिन आज हर दिन यह साफ होता जा रहा है कि जहाँ-जहाँ दो देशों में लड़ाई होती है, वहाँ उन देशों की जनता की युद्ध में अक्सर दिलचस्पी नहीं होती। साम्यवादी देश प्रतिक्रांति का सामना करने के नाम पर और पूँजीवादी देश नागरिक स्वतंत्रता की हिफ़ाज़त के नाम पर जनता को जोश दिलाते हैं। इस तरह एक कृत्रिम युद्ध-ज्वर पैदा किया जाता है। मिस्र पर जो आक्रमण हुआ, उसके बारे में इंग्लैंड और फ्रान्स की जनता का रुख दूसरे देशों की जनता के रुख के समान ही है। हंगेरी में फासिस्टवाद और नात्सीवाद का मुकाबला करने के लिए रूस ने अतिक्रमण किया है। मिस्र में जो आक्रमण हुआ, वह अगर आन्तर्राष्ट्रीय लोकनीति की दृष्टि से निन्द्य है, तो छोटे-छोटे देशों की खुदमुख़्तारी की दृष्टि से हंगेरी में जो अतिक्रमण हो रहा है, वह कम निंदनीय नहीं है।

इन दोनों घटनाओं को लेकर हमारे प्रधान-मंत्री जवाहरलालजी ने जो भाषण किये, उनमें राज्यनीति और राष्ट्रनीति, दोनों का विवेचन है। राष्ट्रनीति का विवेचन करते हुए उन्होंने सबसे ज्यादा जोर आर्थिक स्वावलंबन पर दिया है। पहले भी पंचवार्षिक और द्वितीय पंचवार्षिक योजनाओं का असली मकसद देश को आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाना ही था। लेकिन वह स्वावलंबन दूसरे सामर्थ्यवान् राज्यों की मदद पर निर्भर था। शुरू से ही भूदान-यज्ञ के प्रवर्तक विनोबा ने जतला-जतला कर यह कहा कि जो स्वावलंबन दूसरों की ताकत और मदद का भरोसा करेगा, वह स्वावलंबन कोई मानी नहीं रख सकता। असल में स्वावलंबन का स्वांग बना कर परावलंबन ही उस दशा में अपनी शान दिखाता है। जिस देश का आर्थिक संयोजन आंतरदेशीय राज्यनीति का आश्रय करेगा, वह कभी स्वावलंबी और स्वतंत्र संयोजन नहीं हो सकता। पुराने जमाने में राजनीति चंचल और अस्थिर मानी जाती थी। राजा के स्वार्थ के मुताबिक और उसके मन की तरंग के मुताबिक राजनीति अपने रंग बदलती रहती थी। आज वही बात वैदेशिक राज्यनीति के लिए लागू है। सत्ताधारियों की सुविधा और स्वार्थ के मुताबिक उसका रुख बदलता रहता है। जवाहरलालजी आन्तर्राष्ट्रीय नीति के विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि सारे जगत् के नागरिक हैं। आज कोई देश अपने में बिलकुल स्वतंत्र रूप से परिपूर्ण नहीं रह सकता, यह वस्तुस्थिति है। ऐसी स्थिति में क्या उनके जैसे शांति के अग्रदूत के लिए यह जरूरी नहीं है कि राज्यों की पारस्परिक व्यवहार-नीति से स्वतंत्र आन्तर्राष्ट्रीय लोकनीति की बुनियाद पर भारत की राष्ट्रीय अर्थनीति खड़ी करें।

दुनिया में यंत्रीकरण तेजी से बढ़ रहा है। वैभव की सामग्री बेतहाशा दूसरे देश बढ़ा रहे हैं। ऐसी हालत में हमें अगर उनके साथ कदम मिलाना है, तो हमें आधुनिकतम वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करना होगा। यह बात मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। लेकिन आज इसका मतलब यह होता है कि हम जिनकी बराबरी करना चाहते हैं, उन्हीं की मदद से उनका सामना करने की ताकत हासिल करें। याने यंत्रविद्या में उन्हें हम अपने द्रोणाचार्य मानें, जो हमको अपनी सारी विद्या सिखा कर शिष्य से पराजित होने की आकांक्षा रखेंगे। अगर दूसरों की इतनी उदारता और महानता के आधार पर ही हमारा आर्थिक संयोजन आश्रय रखता है, तो सवाल यह है कि क्या हम अपने संयोजन को वैदेशिक राज्यनीति के साथ बाँध सकते हैं ?

तात्पर्य यह है कि आज सवाल यंत्रोद्योग और दस्तकारियों का अथवा ग्रामोद्योग और शहर के रोजगारों का उतना नहीं है, जितना कि स्वावलंबी और शान्तिनिष्ठ आर्थिक संयोजन का है। इस दृष्टि से जिस अहिंसक अर्थनीति का प्रतिपादन और प्रयोग अपनी रचनात्मक संस्थाओं के द्वारा गांधीजी ने किया, उसके सिवा और कोई तरणोपाय नहीं रह जाता है। आज भारत अगर उस नीति को नहीं अपनायेगा,

www.vinoba.in

तो दूसरे देशों की तरह उसकी अर्थनीति रणनीति की चेरी बनेगी और उसकी अपनी तो कोई रणनीति है ही नहीं, इसलिए उसकी अर्थनीति दुनिया के युयुत्सु समर्थ राज्यों की रणनीति की टहलनी बन कर रहेगी। जवाहरलालजी का पंचशील और शांति का उनका सारा मंत्रजागर इस आपत्ति से देश को नहीं बचा सकेगा।

गोंदिया, १४-११-'५६ —दादा धर्माधिकारी

सामूहिक सज्जनता की शक्ति

(विनोबा)

दुनिया में अनेक प्रकार के लोग होते हैं। कुछ भले होते हैं, कुछ साधारण होते हैं और कुछ थोड़े बुरे भी होते हैं। जो बुरे भी होते हैं, वे सदा के लिए बुरे नहीं होते हैं, वे सुधर सकते हैं। जो भले होते हैं, वे हमेशा भले होते हैं। भले में से कोई बुरे तो बनने वाले हैं नहीं। जो बुरे हैं, उन्हीं में से भले बनने वाले हैं, क्योंकि भलाई में ताकत होती है, बुराई में नहीं। आप किसी सज्जन का व्याख्यान सुनते हैं, जो आपको भलाई का उपदेश देता है, उसका कुछ-न-कुछ असर आप पर होता है। कोई बुराई का व्याख्यान देगा, तो उसका लोगों पर असर नहीं होगा। जैसे अंधकार का हमला प्रकाश पर नहीं हो सकता, वैसे ही बुराई का हमला भी भलाई पर नहीं हो सकता। अगर वह होता है, तो छिपी तौर पर होता है। हमेशा भलाई का हमला बुराई पर होता चला आया है। लोग पूछेंगे कि फिर दुनिया में बुराई की ही बहुत चलती दीखती है, उसका क्या कारण है? वह बुराई लोगों में बाहर से आती है। उसके लिए परिस्थिति में परिवर्तन लाना पड़ेगा। यह सारा प्रयत्न भले लोगों को करना चाहिए।

सज्जन लोग तेहरा प्रयत्न करें

भले लोगों को तेहरा प्रयत्न करना चाहिए। पहला तो यह कि अपने निज के चित्त का परीक्षण करके निज की भलाई बढ़ानी चाहिए। उनको यह नहीं लगना चाहिए कि हम भले हैं। हममें बुराई ही क्या है? हरएक में कुछ-न-कुछ अवगुण हृदय के अंदर छिपे हुए रहते हैं, उन्हें ढूँढ कर वहाँ से हटाना चाहिए। यह व्यक्तिगत आत्मशुद्धि का कार्य भले लोगों को सतत करना चाहिए।

दूसरा काम उन्हें यह करना चाहिए कि सब भले लोगों को इकट्ठा होना चाहिए। आज भले लोग अकेले-अकेले काम करते हैं। अपना-अपना विचार सोचते हैं और दूसरे भले सज्जन के साथ सहयोग नहीं करते हैं। उनमें कुछ विचार का थोड़ा भेद भी होता है। वे उस थोड़े-से विचारभेद को महत्त्व देते हैं और अलग-अलग काम करते हैं। इसलिए उनकी ताकत इकट्ठी नहीं होती है। उनके बीच अनेक संप्रदाय बनते हैं। यह सोचने की बात है कि भक्तों के अलग संप्रदाय बनते हैं और अभक्त सब इकट्ठा रहते हैं। उन सबका समूह है। आस्तिक बँटे हुए रहते हैं और कुल नास्तिक लोग एक हो जाते हैं। पुण्यवान लोग अलग-अलग रहते हैं और पापी लोग इकट्ठे हो जाते हैं। पुण्यवान लोगों को सामूहिक शक्ति प्रकट करनी चाहिए। पहली बात तो यह कि उनके हृदय में भी कुछ-न-कुछ बुराइयाँ छिपी हुई हैं, उन्हें दूर करना चाहिए और उसके बाद दूसरे सज्जन के साथ एकरूप होकर सामूहिक सज्जनता बनानी चाहिए। इस तरह का वे समूह नहीं बनाते, तो उसका कारण यह है कि उनके हृदय में बुराई पड़ी है। इसलिए हमने पहले अपनी बुराई देख कर बाद में दूसरे के साथ एकरूप होने के लिए कहा। वे पुण्यवान, धार्मिक और आस्तिक तो कहलाते हैं, लेकिन वे एक नहीं होते, क्योंकि वे अपने मन में अहंकार रखते हैं। वही बुराई है, इसलिए सज्जनों में पूरी तरह से सज्जनता नहीं है। जो सज्जन दूसरे सज्जनों के साथ एकरूप नहीं हो सकते हैं, वे पूर्ण रूप में सज्जन नहीं हो सकते हैं। उनको जो अहंकार है, वही एक बड़ी दुर्जनता है।

आत्मशुद्धि सामूहिक काम और समाज का परिवर्तन

अल्ला मियाँ का विष्णु भगवान् से संबंध नहीं और विष्णु भगवान् का स्वर्गीय देवता से संबंध नहीं। ईश्वर को नहीं मानने वालों की आपस-आपस में बनती है और आस्तिकों की आपस-आपस में नहीं बनती है, उसका यही मतलब है कि ये आस्तिक संकुचित और सांप्रदायिक हैं, मन में अहंकार रखते हैं। बापू ने यह बहुत दफा समझाया है कि कुछ लोग अपने को खादीधारी कहलाते हैं, वे सज्जन हैं। कुछ लोग नयी तालीम चलाते हैं सज्जन हैं। कुछ लोग छूआछूत मिटाने के पीछे पड़े हैं, वे सज्जन हैं। कुछ लोग स्त्रियों की सेवा में लगे रहते हैं, वे भी सज्जन हैं। बापू ने कहा, सज्जनो! तुम लोग इकट्ठे हो जाओ और एकत्र काम करो। परंतु इसके साथ उसकी नहीं बनेगी, तो उसके साथ इसकी नहीं बनेगी। हम समझते हैं कि यह उनकी सज्जनता में खामी है। इसलिए (१) पहले उन्हें अपनी सज्जनता पूर्ण करनी चाहिए, (२) बाद में सज्जनों के साथ एकरूप होकर सामूहिक काम करना चाहिए और (३) फिर समाज की रचना में हेरफेर करने की हिम्मत करनी चाहिए। समाज की अब की रचना कायम रख कर अगर भला काम करते हैं, तो सारा भला काम इस खराब समाज-रचना में समाप्त हो जाता है। खारे पानी से भरे हुए समुद्र में दो-चार बोतल शहद डालने से खारा समुद्र मीठा नहीं बनता है। यही हालत उन सज्जनों की होती है। आज के सारे समाज में वे अपनी मिठास डालना चाहते हैं, लेकिन उससे कुछ नहीं होता। समाज-रचना में फर्क करने की हिम्मत ही किसी में नहीं है। आज के समाज में जो दुःखी हैं, उनके सामने दया दिखाते हैं। कोई भी मांगने आता है, तो उनको बहुत दुःख होता है और दो मुट्ठी धान भी दे देते हैं, लेकिन ऐसी कोई योजना नहीं करते, ताकि उसे फिर से कभी मांगना न पड़े। वे क्यों भीख मांगते हैं, उसके बारे में सोचेंगे नहीं। परिस्थिति बदलने की हिम्मत और कल्पना ही वे नहीं कर सकते हैं।

भूदान-यज्ञ में यह तेहरा काम करना है। पहले तो सर्वोदय-विचार में विश्वास रखने वाले सज्जनों को अपने हृदय की शुद्धि करनी है। दूसरा, सब लोगों को मिल कर काम करना है। तीसरा, समाज की आज की रचना पर हमला करना है, समाज-रचना बदलनी है।

कार्यकर्ता सतत घूमते रहें

कल ही हमने कार्यकर्ताओं के सामने एक योजना रखी कि एक तालुके में सतत कार्यकर्ता घूमना चाहिए। एक तालुके में हजार-बारह सौ गाँव हों, तो एक-एक गाँव में जाकर सर्वोदय-विचार समझाना चाहिए, तभी हर गाँव में ग्रामसंकल्प होगा कि अपने गाँव में हम स्वराज्य लायेंगे, अपने गाँव की जमीन हम बाँट लेंगे, जमीन की व्यक्तिगत मालकियत नहीं रखेंगे, गाँव में कौन-सा माल बाहर से आना चाहिए, नहीं आना चाहिए, यह सब मिल कर तय करेंगे और गाँव की एक दूकान रखेंगे, जिसके द्वारा सब गाँववाले चीजें खरीदेंगे। गाँव के झगड़ों का गाँव में ही निपटारा होगा। गाँव में ऊँच-नीच, छुआछूत के भेद मिटा देंगे। शादी के लिए किसी को कर्जा नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि शादी सामूहिक होगी। व्यक्तिगत कर्जा नहीं रहेगा। सारे गाँव की आवश्यकता के लिए सब मिल कर सोचेंगे, इस तरह हजारों गाँवों में होगा।

भेदासुर का नाश करें

हिन्दुस्तान में दान-धर्म कम नहीं होते हैं, लेकिन खारे पानी के समुद्र में वह शहद की एक बोतल डालने जैसा है। ये छोटे-छोटे दानपुण्य तो समाज में कितने ही जीर्ण हो गये। क्षयरोगी-शरीर को दूसरा कुछ इलाज नहीं है। उसको जितना खिलाते हैं, वह सारा खत्म होता है। उसको फिर-फिर से खिलाया करो, यह उसका इलाज नहीं है, उसका सही इलाज होना चाहिए। अपने समाज में एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर काम ही नहीं करते हैं, यह क्षयरोग है। 'मेरा घर', 'मेरा लड़का' 'मैं' और 'मेरे' ने सारे समाज को जीर्ण कर डाला है। एक गाँव में एकसाथ रहेंगे, परंतु एक घर सुखी होगा, तो दूसरा दुःखी होगा। दोनों एकसाथ सुखी नहीं होंगे। सुखी घर वाले को दुःखी पड़ोसी की चिंता नहीं और दुःखी घर वाला सुखी घर वाले का मत्सर करेगा। दोनों मिल कर एक-दूसरे की चिंता नहीं करेंगे, तो फिर गाँव के बारे में कैसे सोचेंगे? अपने देश के लिए यह क्षयरोग है। उसमें अनेक संप्रदाय और पंथ हैं, अनेक जातियाँ हैं और आजकल ये पक्ष (राजनैतिक) आ गये हैं। उस क्षयरोग का उत्तम इलाज (औषध) होना चाहिए। जो समझते हैं कि भारत की मुख्य समस्या "अन्नोत्पत्ति" है, वे भारत को समझे ही नहीं हैं। भारत की मुख्य समस्या है—ये अनंत भेद। भारत को यह "भेदक्षय" हुआ है।

भूदान में थोड़ी-थोड़ी जमीन मिले, तो शुरुआत में ठीक है, लेकिन यह भूदान का ढंग नहीं है। भूदान के ढंग में तो गाँव की समस्या हाथ में लेकर गाँव में कोई भूमिहीन नहीं रखना चाहिए। गाँव में जितने भूमिहीन हैं, उन सबको भूमि देने की जिम्मेवारी सबको उठानी चाहिए। जैसे पहले गाँव में कोई बदमाशी करता था और सरकार उसे ढूँढ नहीं सकती थी, तो सरकार गाँव पर एक सामूहिक जुर्माना लगाती थी। वैसे ही आपके गाँव में भेदासुर बढ़ाने के अपराध में आपको २०० एकड़ जमीन प्रेम से दान देने का दंड, गाँव में १२०० एकड़ जमीन है, तो उसका छठा हिस्सा २०० एकड़ जमीन वसूल होनी चाहिए। यह सरकार का दंड नहीं होगा, यह प्रेम का दंड, समझदारी का दंड है। गाँव में से सब जमीनवालों को जमीन देनी होगी। सबको मिल कर उतनी जमीन देनी चाहिए, इसलिए कि सब भूमिहीनों को जमीन मिल जाय। तभी भेदासुर का हनन होगा। फिर गाँववाले मिल-जुल कर काम करेंगे और गाँव की समस्या के बारे में सब एकसाथ बैठ कर सोचेंगे। इस तरह आदत हो जायेगी, तो ग्रामराज्य और सर्वोदय होगा, क्षयरोग मिट जायगा और पुष्टि-लाभ होगा।

(वेलैकौल, कोइंबतूर, ३१-१०-५६) ——

www.vinoba.in

श्री जयप्रकाश बाबू की अनोखी बदरी-केदार-यात्रा

(ओमप्रकाश)

श्री जयप्रकाश नारायणजी की अखिल भारतीय भूदान-यात्रा का पहला कार्यक्रम टिहरी गढ़वाल (उ.प्र.) में रखा गया। १७ जून से यात्रा शुरू होने वाली थी, किन्तु अधिक वर्षा के कारण यात्रा १७ जून के बजाय १८ सितम्बर से शुरू हुई। हरिद्वार से ऋषिकेश, नरेन्द्रनगर और टिहरी इत्यादि स्थानों का दौरा खत्म करने के बाद आपने गढ़वाल में प्रवेश किया। अगस्त्यमुनि तक मोटर में चलने के बाद पैदल यात्रा शुरू हुई। दिन में दो बार चलते थे। जगह-जगह खूब स्वागत होता था, हस्तलिखित अभिनन्दन-पत्र दिये जाते थे। श्री जयप्रकाशजी बराबर कहते थे—"मैं जिस विचार को लेकर आया हूँ, आप लोग उस विचार का ही स्वागत कर रहे हैं, इसलिए मुझे खुशी होती है।" पहले से इस यात्रा की कोई विशेष तैयारी नहीं थी, फिर भी जिस गाँव में जयप्रकाशजी प्रवेश करते थे, उस गाँव के लोग पहले से ही फूल-माला और ढोल इत्यादि लेकर आगे आ जाते थे। जहाँ कहीं दो-एक दिन पहले खबर पहुँच गयी थी, वहाँ लोगों ने सुन्दर-सुन्दर स्वागत-द्वार भी बनाये थे। श्री जयप्रकाश नारायण के दर्शनों की लालसा इन लोगों में इतनी तीव्र थी कि मीलों नीचे उतर कर या ऊपर चढ़ कर घंटों पहले से रास्ते में खड़े हो जाते थे। गाँव में घुसते-घुसते एक अच्छा खासा जुलूस बन जाता था। इसलिए प्रायः सर्वत्र गाँव में पहुँचते ही सभा शुरू हो जाती थी। सभा पूरी होने के बाद ही जयप्रकाशजी अपने ठहरने के स्थान पर पहुँचते थे। श्री केदारनाथ के रास्ते में यात्रियों के ठहरने के लिए बहुत से पड़ाव बन गये हैं, जिन्हें चट्टी कहते हैं। कहीं-कहीं तो इन छोटी-छोटी चट्टियों पर भी लोग पहले से जुटे हुए मिलते थे। सभा की पूरी तैयारी पहले से ही मौजूद देख कर कई जगह तो कार्यक्रम में न होते हुए भी श्री जयप्रकाशजी रुक जाते थे और उन गरीब, नंगे और भूखे ग्रामीणों के स्नेह-भाव से द्रवित होकर भूदान और सर्वोदय का विचार उन लोगों को समझाने लगते थे। बीच-बीच में लोग अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक कठिनाइयों की चर्चा भी जयप्रकाशजी से करते जाते थे। भीदी और दो-एक अन्य स्थानों पर हरिजनों की ओर से कुछ शिकायतें आयीं। उन्हीं में एक शिकायत यह भी थी कि श्री केदारनाथ के मन्दिर में उन्हें नहीं जाने दिया जाता था। जयप्रकाशजी बड़े स्नेह और सहानुभूति के साथ उनकी बातें सुनते थे और अगली सभाओं में उनका जिक्र भी करते थे।

गुप्त काशी की सभा में दूर और पास के गाँवों से भी काफ़ी लोग आये थे। अच्छी उपस्थिति थी। जयप्रकाशजी ने उस सभा में ही जाहिर कर दिया था कि हम केदारनाथजी जा जरूर रहे हैं, किन्तु हम कह नहीं सकते हमें वहाँ मन्दिर का दर्शन होगा या बिना दर्शन किये ही हमें केदारनाथजी से वापिस आना पड़ेगा। जहाँ हमारे एक भाई को हरिजन कह कर जाने से रोका जाता है; वहाँ हम नहीं जाते।

बादलों के टकराने का नया अनुभव

यात्रा शुरू हुई, हम लोग आगे बढ़े और २६ सितम्बर को गौरीकुंड आ गये। गौरीकुंड से केदारनाथ की खड़ी चढ़ाई है। उस दिन खूब वर्षा हुई और दूसरे दिन भी सुबह से ही वर्षा शुरू हो गयी थी। उस दिन ६ बजे न चलकर ८॥ बजे हम लोगों ने यात्रा शुरू की। श्री केदारनाथ के एक पंडा गौरीकुंड आ गये थे। उन्होंने यह देख कर कि हम लोग देर से श्री केदारनाथ पहुँचेंगे और मन्दिर दिन को २ बजे तक ही खुला रहता है, हमसे पूछा कि मन्दिर को ३ बजे तक खुला रखने की व्यवस्था की जाय क्या? जयप्रकाशजी को अपने लिए इस प्रकार का कोई परिवर्तन कराना पसन्द नहीं था, इसलिए निश्चय हुआ कि अगले दिन ही मन्दिर जायँगे। ठीक भी हुआ, खड़ी चढ़ाई और निरन्तर वर्षा के कारण रास्ते में ही काफी देर हो गयी, दो बजे के बाद ही हम सब लोग अपने पड़ाव पर पहुँचे। एक नया, नितान्त नया अनुभव ही था वह! हमारे पीछे से बादल आते, हमसे टकराते और शायद सन्देश के रूप में ही अपने जीवन के कुछ जीवित कण हमारे पास छोड़ जाते। उस समय कालिदास की याद आयी और हमें लगा यह मेघदूत इतनी तेजी से हमारे पीछे इसलिए दौड़ता भागता चला आ रहा है कि श्री केदार नगरी में पहुँचने से पहले ही हमें दरिद्रनारायण का यह सन्देश सुना दे—"भगवान् केदारनाथ का दर्शन केदार मन्दिर की मूर्ति पर घी चुपड़ने और जल चढ़ाने से नहीं होगा। भगवान् केदार का दर्शन करना चाहता है, तो उनकी दलित, उत्पीड़ित और शोषित प्रजा का स्नेहन कर, प्रेमाश्रुओं से भगवान् की उस जीती जागती मूर्ति का प्रक्षालन कर।"

हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश का प्रश्न

केदारनाथ पहुँचते ही मन्दिर की ओर से वहाँ के पंडे और पुजारियों ने वेद-मंत्रों के उद्घोष के साथ श्री जयप्रकाश नारायण का भव्य स्वागत किया। जगह-जगह पुष्प-मालाएँ और वनकमल भेंट किये गये। 'भूदान सफल करेंगे', 'विनोबा अमर हों' और 'जयप्रकाश नारायण जिन्दाबाद' के नारों से सारी केदार-पुरी गूँज उठी। ठहरने के स्थान पर पहुँचते ही कई लोग मिलने आये। ऐसा लगता था कि मन्दिर के लोगों को श्री जयप्रकाश नारायण के निश्चय का पता चल गया था। पंडे और पुजारी नहीं चाहते थे कि केदारनाथ आकर श्री जयप्रकाश नारायण बिना दर्शन किये ही लौट जायँ। श्री जयप्रकाश नारायण के लिए वहाँ के सभी लोगों के मन में अपूर्व श्रद्धा और प्रेम था। कई लोगों ने यह कह कर कि 'मन्दिर में किसीके लिए रोकटोक नहीं है, सभी जाते हैं श्री जयप्रकाश नारायण को फुसला कर मन्दिर में ले जाने की कोशिश भी की, किन्तु यह हुआ नहीं। श्री जयप्रकाश नारायण का जोर इस बात पर था कि कोई व्यक्ति कहे कि वह हरिजन है और तब उसे मन्दिर में जाने दिया जाय। कानून तो है कि हरिजन बिना किसी रोक-टोक के हर मन्दिर में जा सकते हैं, हम भी चाहते, तो कानून के बल पर हरिजनों को लेकर मन्दिर में प्रवेश कर सकते थे, किन्तु उससे द्वेष और कलह ही पैदा होते, प्रेम और सद्भाव नहीं। आज पंडों के परम्परागत रूढ़ संस्कार और विचारों को बदलने की जरूरत है, उन्हें दबाने और कुचलने से काम नहीं चल सकता। कानून की पंगुता का एक जीता-जागता नमूना ही इसे समझना चाहिए।

पुजारियों द्वारा स्वागत

दूसरे दिन मौसम साफ था। स्नानादि करने के बाद लगभग १० बजे फिर कुछ पंडे लोग आये और श्री जयप्रकाश नारायणजी अपने साथियों को लेकर मन्दिर की ओर चल दिये। श्री केदारनाथ का मन्दिर एक अति प्राचीन मन्दिर है। कहते हैं, पांडवों के समय में इसका निर्माण हुआ था। मन्दिर के ठीक पीछे हिमाच्छादित विशाल शैल खंड हैं और ठीक आगे नन्दी की एक भव्य शिला-मूर्ति है। पास में ही मन्दाकिनी का मधुर कलकल नाद सुनायी पड़ता है। मन्दिर के सामने एक बड़ा खुला चबूतरा है। एक क्षण के लिए तो ऐसा मालूम होने लगता है, मानो स्वयं भगवान् कैलासपति पद्मासन लगाये ध्यानमुद्रा में बैठे हैं। ज्यों ही हम लोग मन्दिर के पास पहुँचे, फिर से वेद-मंत्रों की मधुर ध्वनि कानों में गूँजने लगी और देखते-देखते जयप्रकाशजी का गला फूलमालाओं से भर गया। मन्दिर के मुख्य पुजारी ने ब्रह्मकमल का एक सुन्दर पुष्प भेंट किया और हम लोग मन्दिर के चबूतरे पर पहुँच गये। चबूतरे पर पहले से ही दरी और कालीन बिछे हुए थे। लगभग ४०—५० व्यक्ति, जिनमें अधिकांश मन्दिर-समिति के सदस्य पंडे और पुजारी ही थे, वहाँ आ कर बैठ गये। क्षणिक स्तब्धता के बाद एक ने दूसरे की ओर देखा और यह छोटी-सी बैठक एक सभा के रूप में बदल गयी। मन्दिर के एक पुजारीजी ने बड़े नम्र, मधुर और गौरव भरे शब्दों में यह कह कर जयप्रकाशजी का स्वागत किया कि श्री जवाहरलाल नेहरू के बाद देश की बागडोर संभालने का भार उन्हीं पर आने वाला है। उनके बाद फिर एक दूसरे पुजारीजी ने संस्कृत कविता के द्वारा उनका अभिनन्दन किया। ऐसा लगता था मानो स्वयं भगवान् केदारनाथ ही श्री जयप्रकाश नारायण की इस परम धार्मिक पदयात्रा से प्रसन्न होकर भूदान और सर्वोदय की पूर्ण सफलता के लिए आशीर्वाद दे रहे थे। इसके बाद गढ़वाल जिला भूदान-संयोजक श्री मानसिंह रावत ने भूदान सम्बन्धी कुछ प्राथमिक बातें कहीं और अन्त में जयप्रकाशजी का भाषण हुआ।*

श्री जयप्रकाशजी के भाषण के बाद उसी क्षेत्र के एम. एल. ए. श्री गंगाधरजी मेठानी खड़े हुए। मेठानीजी उस क्षेत्र के बड़े लोकप्रिय नेता हैं। उस क्षेत्र के लोग उन्हें गढ़वाल के 'मालवीय' कहते हैं। उत्तराखंड विद्यापीठ के नाम से एक बड़ी भारी संस्था वे चला रहे हैं। श्री मेठानी ने अपने संक्षिप्त भाषण में हरिजनों के मन्दिर-प्रवेश की बात निकाली। उन्होंने कहा कि हम कानून के बल पर प्रवेश नहीं करना चाहते। मंदिर के पंडे-पुजारी लोग शायद पहले से ही इस प्रश्न का उत्तर तैयार करके लाये थे। एक सज्जन खड़े हुए और उन्होंने हरिजन गंदे रहते हैं, उनका खान-पान ठीक नहीं है, मन्दिर में शुद्धता चाहिए इत्यादि पुराने तर्कों को दोहराते हुए अन्त में कहा, "भगवान् ने ही चारों वर्ण बनाये हैं, चारों के कर्तव्य भी अलग-अलग बना दिये हैं, हम तो उसी कानून की रक्षा करने वाले चौकीदार मात्र हैं।"

* भाषण इसी अंक में पृष्ठ ३ पर दिया गया है।

www.vinoba.in

बिना दर्शन वापस

उनके तर्कों में कुछ जान तो थी नहीं, फिर भी श्री जयप्रकाश नारायण ने गन्दगी की बात स्वीकार करते हुए कहा कि ठीक है, गन्देपन से मन्दिर में नहीं जाना चाहिए और इसलिए यह नियम हो कि गंदेपन से लोग मन्दिर में नहीं जायँगे, फिर वे भले ही ब्राह्मण ही क्यों न हों। इस बातचीत के बाद जब फिर जयप्रकाशजी से दर्शन करने के लिए कहा गया, तो उन्होंने बहुत दुःखी और द्रवित होकर गंभीर स्वर में यही कहा—"हमने हिमालय का दर्शन कर लिया, इसी में केदारनाथ का भी दर्शन हो गया। हम कानून का सहारा लेना नहीं चाहते। कानून तो है, फिर भी जब तक आप लोगों का दिल नहीं बदलता, तब तक कुछ होता नहीं। बिहार में विनोबाजी को देवघर में रोका गया, तो बिहार के मुख्य मंत्री श्रीकृष्णसिंहजी दलबल के साथ देवघर पहुँचे और मंदिरों में हरिजनों का प्रवेश हुआ। यहाँ भी डा० सम्पूर्णानन्द कानून के बल पर हरिजनों का प्रवेश करा सकते हैं। हम तो इस तरह कानून के बल पर मन्दिर-प्रवेश नहीं करना चाहते।" इतना कह कर बिना दर्शन किये ही श्री जयप्रकाश नारायण केदारनाथजी के मंदिर से वापिस चले आये।

बाबा राघवदासजी का प्रेरक और महान् संकल्प

परमहंस बाबा राघवदासजी ने अपनी दो वर्ष की अखंड पदयात्रा के बीच यह नया संकल्प किया है कि जब तक आंदोलन पूरा नहीं होगा, तब तक वे आश्रम, बरहज (देवरिया) नहीं लौटेंगे।

बाबाजी स्वाधीनता-संग्राम के अग्रणी नेता, कर्मठ कार्यकर्ता और महान् साधक रहे हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति और विकास के लिए उन्होंने सतत प्रयत्न किया है। दीन-दुखियों की सेवा उनका स्वाभाविक क्षेत्र है। कुष्ठ-रोगियों की सेवा, व्यवस्था तथा हरिजनों का उत्थान-उद्धार करने वाले उ० प्र० के एकमात्र सेवक बाबाजी हैं। उनकी तपस्या, सादगी, अवैरता, सहनशीलता, निरंहकारी सहज-सरल-स्वभाव, सतत तीव्रता के साथ काम में जुटे रहने की वृत्ति सब पर असर डालने वाली है।

स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद बाबाजी ने राष्ट्र-सेवा के लिए सरकारी कामों में भी थोड़ा-बहुत हाथ बँटाया। विधान-सभा में चुनाव लड़ कर गये। लेकिन उन्हें इन कामों में आत्म-तुष्टि और संतोष नहीं मिला। ज्यों ही उन्होंने आचार्य विनोबा की पैदल यात्रा की बात सुनी, तुरंत भूदान की महिमामयी, मानवीय जनक्रांति के भार को अपने कंधों पर उठा लिया। मथुरा-संमेलन में ५ लाख एकड़ का संकल्प सहयोगियों के साथ आपने किया। विनोबाजी जितने दिनों तक उ० प्र० में थे, सतत भूदान-कार्य में पूरी शक्ति लगा कर बाबाजी लगे रहे।

उत्तर प्रदेश से बिहार जाते समय पू० विनोबाजी ने आखिरी पड़ाव पर वहाँ उपस्थित उ० प्र० के सभी सेवकों को बुलाया। विनोबाजी ने स्वयं अपने हाथों भविष्य में सतत भूदान-कार्य में लगे रहने के लिए एक संकल्पनामा लिखा; जिस पर उन्होंने सर्वप्रथम हस्ताक्षर किया। बाबाजी का दूसरे नम्बर पर हस्ताक्षर हुआ और इसके बाद अन्य लोगों का। संकल्प-पत्र भर-भरा कर विनोबाजी बिहार-भ्रमण पर निश्चिंत हो निकल पड़े।

चांडिल-संमेलन तक बाबाजी का उत्साह काफी बढ़ा। उन्होंने घोषणा की कि ११ लाख का कोटा उ० प्र० अगले संमेलन तक पूरा करेगा। अनेकों कारणों से 'गया'-संमेलन तक उ० प्र० का काम बहुत कम हुआ। विनोबाजी ने भी इसका उल्लेख किया। एकाग्र हो, सारे कामों को छोड़ कर भूदान में लगने की मार्मिक अपील संत ने की। संत की अन्तरवाणी का स्पर्श बाबा को हुआ। अहिंसक क्रांति की प्रक्रिया अपने से शुरू होती है। अतः बाबाजी किसीकी ओर बिना देखे पूरे मनोयोग से सर्वप्रथम भूदान-कार्य में जुट पड़े। गांधी-निधि के संचालकत्व से मुक्ति भी उन्होंने इसी बीच ले ली और हिम, आतप, वर्षा की बौछारें सहते हुए अपने लक्ष्य पर बराबर बढ़ते चले जा रहे हैं। उन्हें काफी सफलता भी मिल रही है। विनोबाजी ने भी इसकी सराहना समय-समय पर की है।

उत्तर प्रदेश एक महान् प्रान्त है, गांधी-आश्रम जैसी महान और विशाल संस्था वहाँ काम करती है। कांचीपुरम् सर्वोदय-संमेलन के बाद सबके सम्मिलित प्रयास से उ० प्र० का भूदान-आंदोलन नये जीवन के साथ अँगड़ाई लेकर उठ रहा है। ठीक मौके पर बाबाजी का संकल्प सबके लिए एक चुनौती और आह्वान के रूप में उपस्थित हुआ है। इससे उ० प्र० के कर्णधारों और कर्मियों को प्रेरणा और उत्साह मिलेगा।

—रामवृक्ष शास्त्री

तमिलनाड की पदयात्रा से

(निर्मला देशपांडे)

पलईकोटई में कुछ संवाददाता विनोबाजी से मिलने आये। उनमें से एक भाई ने राजाजी के हाल में ही प्रकाशित हुए एक वक्तव्य के बारे में विनोबाजी की राय पूछी, जिसमें कहा था कि "सरकार पर अंकुश रखने की दृष्टि से एक मजबूत विरोधी पक्ष का होना आवश्यक है।" विनोबाजी ने इस पर कहा कि "हमारी राय में, सरकार को ठीक रास्ते पर रखने के लिए एक ऐसे समाज की आवश्यकता है, जो सत्ता हाथ में नहीं लेगा, सेवा करेगा और अपना नैतिक वजन सरकार पर भी डालेगा और जनता पर भी डालेगा। सरकार पर अंकुश रखने के लिए विरोधी पक्ष का होना पर्याप्त नहीं है (Opposition Party is not a Sufficient Corrective), क्योंकि विरोधी पक्ष सत्ता का अभिलाषी होता है, इसलिए सत्ताधारी पक्ष जो कुछ हथकंडे अपनाता है, वे ही हथकंडे उन्हें भी अपनाने पड़ते हैं।"

'दिवाली' की गलतफहमी

तमिलनाड में "द्रविड़ कळहम्" नामक एक संस्था है, जिसकी विचारधारा यह है कि तमिलनाड के लोग द्रविड़ हैं, जिन पर उत्तर के आर्यों ने आक्रमण किया हैं। इस संस्था के प्रमुख श्री रामस्वामी नायकर ने यह भी कहा है कि रावण हमारा देवता है और राम आर्यों का देवता है, जिसने हम पर आक्रमण किया। इसी संस्था की ओर से यहाँ पर रामायण तथा राम की प्रतिमा जलाने की बात उठायी गयी थी। श्री नायकरजी ने हाल में ही दिवाली मनाने के खिलाफ कहा था कि "दिवाली आर्यों का त्यौहार है। नरकासुर के वध की खुशी के उपलक्ष्य में त्यौहार मनाया जाता है। लेकिन नरकासुर हमारा देवता है, इसलिए हम द्रविडों को दिवाली नहीं मनानी चाहिए।" एक संवाददाता ने इस बारे में विनोबाजी के विचार जानने चाहे। विनोबाजी ने कहा कि "नरकासुर का वध, यह तो एक पौराणिक रूपक है। पुराने लोगों को रूपकों की परिभाषा में बोलने की आदत थी। उनका शब्दार्थ नहीं लेना है। नरकासुर नाम का कोई शख्स था, ऐसी बात नहीं है। दिवाली का उत्सव मनाया जाता है, इसके ३–४ उद्देश्य हैं : (१) हिन्दुस्तान में आगे की फसल का अंदाज दिवाली के समय आ जाता है। इसलिए फसल अच्छी आयेगी, इसकी खुशी में उत्सव मनाया जाता है। (२) दिवाली के समय व्यापारियों का नया वर्ष आरंभ होता है। (३) इस समय हिन्दुस्तान के बहुत-से हिस्सों में बारिश समाप्त होती है। इसलिए सारा कूड़ा-कचरा जला कर खेत साफ करने का यही समय है। इसी समय घर में सफेदी करके सब स्वच्छ किया जाता है; नरकासुर के वध का मतलब है, सारी गंदगी खत्म करना। (४) इसका और एक उद्देश्य है, जो तमिलनाड में लागू नहीं होता है, क्योंकि यहाँ पर अभी दिवाली के समय बारिश समाप्त नहीं होती। लेकिन हिन्दुस्तान के बहुत-से हिस्सों में, खासकर उत्तर में दिवाली के समय आकाश बिलकुल साफ हो जाता है—वैसे गरमी के दिनों में भी आसमान साफ रहता है, परंतु उस वक्त हवा में कुछ धूल रहती है। दिवाली के वक्त आकाश बिलकुल धुला हुआ, स्वच्छ-निर्मल हो जाता है, इसलिए अमावस की रात को नक्षत्रों का उत्तम दर्शन होता है। बच्चों को नक्षत्रों का ज्ञान देने के लिए धरती पर दीपक लगा कर नक्षत्रों की ही रचना की जाती है। अगर आपके तमिलनाड़ में आश्विन की अमावास्या की रात को आसमान साफ न हो, तो आप कार्तिक या मार्गशीर्ष की अमावास्या को यह उत्सव कर सकते हैं।

मूर्ति तोड़ें नहीं, विचार समझायें

फिर भी हम दिवाली के ज्यादा पक्ष में नहीं हैं, क्योंकि हिन्दुस्तान के गरीबों को सुख हासिल नहीं है। इसलिए आज दिवाली जरा सौम्य रूप में मनानी चाहिए। जब सब लोग सुखी होंगे, तब हम जोर-शोर से दिवाली मनायेंगे। लेकिन इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि दिवाली आम जनता का उत्सव है। जनता के उत्सव खत्म नहीं करने चाहिए, उनका स्वरूप सुधारना चाहिए। उनमें कुछ दोष दाखिल हुए हों, तो उन्हें दूर करना चाहिए। पुराणों में जो रूपक हैं, उनका अर्थ जनता को समझा देना चाहिए। लेकिन अगर हम अर्थ न समझायें और उन त्यौहारों का विरोध करें, तो जनता भी हमारा विरोध करेगी। रामस्वामी नायकर का जो उद्देश्य है कि जनता में जो तरह-तरह के गलत ख्याल हैं, उनको हटाना होगा, उसके साथ तो मैं सहमत हूँ, परंतु रामस्वामी कहते हैं कि वे श्रीरंग की मूर्ति को तोड़ेंगे! मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि इस तरह के काम मुसलमानों ने किये हैं, लेकिन उनका हिन्दुओं पर कोई असर नहीं हुआ। उसके बदले अगर वे प्रेम से समझाते कि "तुम लोग पत्थरों की पूजा करते हो, तो पत्थर बनते हो,"

www.vinoba.in

तो लोग समझ जाते। बाबा हमेशा लोगों को समझाता है कि "तुम जिसकी पूजा करोगे, उसके जैसे बनोगे। पत्थर की पूजा करते हो, तो पत्थर के जैसे कठोर-हृदय बनते हो। लोगों से प्रेम नहीं करते, गरीबों के लिए दया नहीं रखते, उन्हें खिलाते नहीं और पत्थर की मूर्ति के सामने नैवेद्य चढ़ाते हो, तो इसका क्या उपयोग है? इस तरह समझाना चाहिए। लेकिन मूर्तिभंजन करोगे, तो फिर ज्ञान का प्रचार नहीं होगा।"

बुनकर और किसान परस्परावलंबी बनें

शिवगिरि में बुनकरों के प्रतिनिधि विनोबाजी से मिलने आये। उनके प्रमुख व्यक्ति के बदन पर मिल का कपड़ा देख कर विनोबाजी ने कहा, "आप खुद मिल का कपड़ा पहनते हैं, घर की बहनों को मिल की साड़ियाँ पहनाते हैं, तो फिर लोग आपका कपड़ा क्यों खरीदेंगे? वे भी मिल का सस्ता कपड़ा खरीदेंगे। हम नहीं समझते कि इस तरह से आप जिन्दा रहने वाले हैं। आप लोग अगर टिकना चाहते हैं, तो आपको बुनकर और किसानों के संघ बनाने चाहिए और किसानों को संकल्प करना चाहिए कि हम सूत कातेंगे और गाँव के बुनकरों का बुना हुआ ही कपड़ा पहनेंगे। बुनकरों को निश्चय करना चाहिए कि किसानों का कता हुआ सूत ही हम बुनेंगे और वही कपड़ा पहनेंगे। सरकार बिजली के करघे की बात कर रही है, उसके खिलाफ़ आपको आवाज उठानी चाहिए। आप आवाज नहीं उठायेंगे, तो सरकार समझेगी कि उसकी नीति जनता को पसंद है।"

कुट्टपालेयम् में गाँव के जमींदार के यहाँ विनोबाजी का निवास था। जमींदार अपनी माताजी तथा तीन भाइयों के साथ विनोबाजी से मिले। विनोबाजी ने उनकी ओर देख कर कहा—"बहुत अच्छा, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चार भाई दीखते हैं। अब इनमें से एक का जीवनदान तो हमें मिलना चाहिए।" फिर विनोबाजी ने वेद की शुनःशेप की कहानी सुनायी।

कीर्ति दुनिया में फैलाने वाला बेटा

वह सुन कर मझले दो बेटों ने एक-से-एक बढ़ कर कहा कि मैं जीवनदान दूँगा। फिर बड़े भाई ने कहा कि "ये अभी छोटे हैं, मेरे लड़के बड़े हो गये, जो घर का काम सम्हालेंगे, इसलिए मैं जीवनदान दूँगा।" जब किसी ने कहा कि बड़े भाई एम० एल० ए० हैं और वे उसे छोड़ कर आना चाहते हैं, तो विनोबाजी ने कहा—"ठीक है, राजनीति के मंच पर इस वक्त बहुत भीड़ है। नव बाबू ने देखा कि सत्ता के जरिये क्रान्ति नहीं हो सकती है। इस तरह जिन्हें क्रान्ति का दर्शन होगा, वे राजनीति को छोड़ कर आयेंगे।" जमींदार भाई ने यह भी बताया कि पास के गाँव में उनकी २५० एकड़ जमीन है और अगर वहाँ ग्रामदान हो जायेगा, तो वे वह सारी जमीन दान देंगे। जब विनोबाजी ने उनकी माता से कहा कि "आपके चार बेटे हैं, तो मुझे पाँचवाँ समझ कर पाँचवाँ हिस्सा दीजिये," तो माता ने कहा, "आप यहीं रहिये और सारी संपत्ति अपनी ही समझिये।" विनोबाजी ने हँसते हुए कहा—"मैं तो आपके घर की कीर्ति दुनिया में फैलाना चाहता हूँ। मैं ऐसा लड़का नहीं हूँ, जो घर बैठा रहेगा।"

भिक्षा नहीं, 'हक' चाहिए

१९५१ में दिल्ली के पास विनोबाजी ने "मैं भिक्षा माँगने नहीं आया हूँ, दीक्षा देने आया हूँ," यह सूत्र घोषित किया था, तब से कई दफा उन्हें इस सूत्र पर भाष्य करना पड़ा है। यद्यपि बिहार, उड़ीसा, तेलंगाना आदि प्रांतों में भूमिक्रान्ति की हवा तेजी से फैल रही है, फिर भी तमिलनाड में अभी हवा बन रही है। विनोबाजी कहते हैं कि 'यहाँ पर फसल काटने का काम नहीं, बल्कि हल चलाने का काम चल रहा है।' इसलिए बिहार में १९५३-५४ में उन्हें जो 'दानपत्र वापस-आन्दोलन' चलाना पड़ा, उसी का कुछ प्रयोग अभी वे यहाँ भी कर रहे हैं। जब कि बड़ी जमीनवाले, बहुत ही कम दान देते हैं, तो विनोबाजी अपने सूत्र का उच्चारण कर उनका दानपत्र वापस कर देते हैं। वेलैकोविल में एक भाई पाँच एकड़ का दानपत्र लेकर आये। विनोबाजी ने जब उनसे पूछा कि आपके पास कितनी जमीन है, तो जवाब मिला कि ४५० एकड़। उनके दानपत्र पर 'दान नाकाफी, इसलिए वापस' यह लिख कर विनोबाजी ने उनका दानपत्र लौटा दिया और उनसे कहा कि "अगर हम ४५० एकड़ में से ५ एकड़ का दान लेते हैं, तो हम अपने आन्दोलन को अपने ही हाथों से काटते हैं। ऐसे दानपत्र मैं अपने हाथों से फाड़ डालूंगा। मैं कोई भिक्षा नहीं माँग रहा हूँ, मैं हक माँग रहा हूँ। जो शख्स हमारा हक कबूल नहीं करता है, उससे हमें कुछ भी नहीं चाहिए। अगर हम अपने आश्रम के लिए जमीन माँगते होते, तो आप जो भी देते उपकार मान कर ले लेते। परंतु यह आन्दोलन ही भिन्न प्रकार का है। यह तो शांतिमय क्रांति है। अगर इस तरह कहने से हमें एक भी एकड़ जमीन न मिले, तो हम नाचेंगे। लेकिन हम अगर ऐसे दान ले लेंगे, तो हम खुद ही अपने आन्दोलन को खत्म कर डालेंगे।"

कण्णावरम् में भी यही हुआ। एक भाई के पास ४०० एकड़ जमीन थी। उन्होंने पहले चार एकड़ का दान दिया था और अब वे एक एकड़ का दानपत्र लेकर आये थे। विनोबाजी ने उनसे कहा—"अगर हम आपका यह दान लेंगे, तो फिर हम कम जमीनवालों से माँग नहीं सकेंगे। फिर पचास एकड़वाला कहेगा कि ४०० वाले ने पाँच एकड़ दिया, तो मेरी जमीन मेरे अपने लिए ही पर्याप्त नहीं है। इसलिए आपका दान लेने से दान का कार्य बढ़ता नहीं, बल्कि खंडित होता है। क्यों, मैं ठीक कह रहा हूँ न?"

हैसियत के अनुसार दान दें

उस भाई ने धीरे से जवाब दिया—"जी हाँ, ठीक है। परन्तु मैं तकलीफ में हूँ, मुझ पर बहुत कर्ज है।" यह सुन कर विनोबाजी ने कहा—"तो फिर हमें आपका दान लेना ही नहीं चाहिए। हम समझते हैं कि जो मुश्किल में है, उससे दान लेना ही पाप है। इसलिए हम आपका यह दान भी वापस कर रहे हैं और पुराना चार एकड़वाला दानपत्र भी वापस कर रहे हैं। अगर आप कम देते हैं, तो आपकी प्रतिष्ठा नहीं रहेगी, याने जमीन भी जायगी और बदनामी भी होगी। इसलिए आपका दान वापस करने में ही आपकी इज्जत रहेगी। हम चाहते हैं कि गाँव के सब लोग इकट्ठे होकर अपने गाँव की समस्या के बारे में सोचें। गाँव में भूमिहीन कितने हैं, उनके लिए कितनी जमीन चाहिए, इसका हिसाब करके फिर हर कोई अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार दान देकर उतनी जमीन पूरी कर दें और फिर गाँव की सभा बुला कर उस जमीन का बँटवारा करके यह घोषित किया जाय कि 'हमारे गाँव में भूमिहीन कोई न रहा।' इस तरह गाँव-गाँव के लोग अपनी जिम्मेदारी महसूस करके इस काम को उठायेंगे, तभी क्रान्ति होगी।"

दानपत्र वापस लेकर जमींदार भाई दुःखी होकर घर लौटे। फिर विनोबाजी ने कार्यकर्ताओं से कहा—"ऐसे बड़े लोगों के पास छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं को नहीं जाना चाहिए। भीष्म-द्रोण का मुकाबला करने के लिए अर्जुन को ही भेजना पड़ता है, पांडव-सेना का कोई भी मामूली सिपाही वह काम नहीं कर सकता है। इसलिए छोटे कार्यकर्ता छोटों से हजारों दानपत्र हासिल करके हवा पैदा करें। फिर उस हवा का नैतिक असर बड़ों पर भी होगा।"

चार आर्य सत्य

हे भिक्षुगण! चार आर्य सत्य हैं—पहला आर्य सत्य दुःख है। पैदा होना दुःख है, बूढ़ा होना दुःख है, मरना दुःख है। शोक करना दुःख है। रोना-पीटना दुःख है। पीड़ित होना दुःख है, चिन्तित होना दुःख है। (रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान) ये पाँच उपादान स्कन्ध दुःख हैं।

दूसरा आर्य सत्य दुःख समुदय (दुःख का कारण) है। यह जो तृष्णा है, जो बार-बार जन्म लेने का कारण है, जो लोभ तथा रोग से युक्त है, जो सुःख भोग की इच्छा से इधर-उधर चित्त को खींचती है यह जो तृष्णा है—काम तृष्णा, भव-तृष्णा तथा विभव तृष्णा—यह तृष्णा ही दुःख समुदय के बारे में आर्यसत्य हैं।

तीसरा आर्य-सत्य दुःख विरोध का आर्यसत्य है। जो उस तृष्णा से संपूर्ण वैराग्य, तृष्णा का त्याग-परित्याग, तृष्णा से मुक्ति, अनासक्ति, इसे दुःखनिरोध आर्य सत्य कहते हैं।

हे भिक्षुगण! चौथा आर्य सत्य दुःखनिरोध की ओर से जाने वाला मध्यमा-प्रतिपदा या मध्यम मार्ग है। यही आर्य अष्टांगिक मार्ग हैं।

अब तक ये चार आर्य सत्य इससे पहले कभी सुने नहीं गये थे। इससे मेरे अंतर में सच्ची (चक्षु) दृष्टि उत्पन्न हुई। ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई और आलोक उत्पन्न हुआ।

हे भिक्षुगण! जब तक मुझे इन चार आर्य सत्यों को तेहरा करके बारह प्रकार से यथार्थ ज्ञान-दर्शन स्पष्ट नहीं हुआ था, तब तक मैंने यह दावा नहीं किया कि मैंने देव और मारसहित लोक में तथा श्रमण, ब्राह्मण और देव—मनुष्यों से युक्त प्रजा में सबसे बढ़कर सम्यक् ज्ञान को पा लिया। लेकिन जब मुझे इन चार आर्य सत्यों का विशुद्ध ज्ञान-दर्शन हुआ, तो मैंने देव लोक में, मार लोक में, श्रमण जगत् और ब्राह्मण प्रजा में देव और मनुष्यों से यह प्रकट किया कि मुझे अनुत्तर सम्यक् संबोधि प्राप्त हुई और मैं अभिसंबुद्ध हुआ, मेरा चित्त निर्विकार और विमुक्त हो गया और अब यही मेरा अंतिम जन्म है।

—भगवान् बुद्ध

---

www.vinoba.in

भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण

राजस्थान में भूमि-वितरण-सप्ताह

राजस्थान भूदानयज्ञ-बोर्ड के निश्चयानुसार राजस्थान के विविध क्षेत्रों में गत ७ से १४ अक्टूबर तक भूमि-वितरण-सप्ताह मनाया गया।

डूंगरपुर में जिला भूदान-संयोजक श्री गौरीशंकर उपाध्याय ने इस काल में अपने साथियों सहित ७ गाँवों की पदयात्रा की। पदयात्रा में २ गाँवों के ११७ परिवारों में ५४६ बीघा भूमि का वितरण किया गया तथा १२३ बीघा भूदान १० दाताओं से प्राप्त किया व साधनदान में २ बैल मिले। कुछ साहित्य-बिक्री भी हुई, व भूदान-पत्रों के ग्राहक बने।

चुरू जिले की सरदारशहर तहसील में इस काल में १२ गाँवों के ४० परिवारों में ४३६७ बीघा भूमि का वितरण हुआ।

जयपुर जिले की दूदू तहसील में श्री रामसहाय पुरोहित के संयोजकत्व में साली, हरसोली व बीजालोव में क्रमशः २६१, १५१ व ५१ बीघा भूमि का वितरण ४३, २५ व ६ परिवारों में किया गया। साली के वितरण-समारोह में राजस्थान भूदानयज्ञ-समिति के संयोजक श्री गोकुल भाई भट्ट भी उपस्थित थे। आपने वहाँ बड़े ही रोचक ढंग से ग्रामीणों को भूदान-आंदोलन की बात समझायी। साली में इस अवसर पर ३। बीघा भूमि का दान भी प्राप्त हुआ।

राजस्थान खादी-संघ द्वारा साहित्य-प्रचार

गत १५ अगस्त से २ अक्टूबर तक की अवधि में राजस्थान खादी-संघ ने भूदान-साहित्य तथा भूदान-पत्रों के व्यापक प्रचार की दृष्टि से रियायती मूल्य पर साहित्य देने व ग्राहक बनाने का कार्यक्रम रखा था। उस योजना के अन्तर्गत संघ की विभिन्न शाखाओं ने स्थानीय कार्यकर्ताओं के सहयोग से इस अवधि में लगभग ८०००) का भूदान-साहित्य बेचा तथा २००० से ऊपर भूदान-पत्रों के ग्राहक बनाये। "ग्रामराज" के ग्राहक काफी संख्या में बने। अब संघ यह योजना बना रहा है कि साहित्य-प्रचार-योजना को व्यापक बनाने की दृष्टि से विद्यार्थियों द्वारा साहित्य-बिक्री करायी जाय और उन्हें उचित कमीशन दिया जाय।

विंध्यप्रदेश

अगस्त, सितम्बर व अक्टूबर १९५६ में १९१ गाँवों से ५७७ दाताओं द्वारा १७१२ एकड़ भूमि-दान, ५८ दाताओं से २०८८) के वार्षिक सम्पत्तिदान तथा ७ मन १० सेर वार्षिक गेहूँ का बीजदान प्राप्त हुआ। "भूदान-यज्ञ" साप्ताहिक के ८० ग्राहक बने और १३८१) का सर्वोदय एवं भूदान-साहित्य बिका। ६१ टोलियों ने ५०५ गाँवों में १८०५ मील की पदयात्रा की। ११४ आदाता परिवारों में ८१० एकड़ भूमि का वितरण हुआ। इस कार्य में ७८ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भाग लिया।

टीकमगढ़ जिले की निवाड़ी तहसील में प्रान्तीय भूदान सामूहिक पदयात्रा-शिविर १३ सितम्बर से २० सितम्बर तक सम्पन्न हुआ। अखिल भारत सामूहिक पदयात्रा-उपसमिति के संयोजक श्री ठाकुरदास बंग ने शिविर का उद्घाटन तथा श्री विनोबा के सहयात्री श्री सुरेशराम भाई ने शिविर का संचालन किया। २० सितम्बर को विंध्य-प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री शम्भूनाथ शुक्ल ने समाप्ति-समारोह सम्पन्न किया। इस अवसर पर शुक्लजी ने अपनी मासिक आय का आठवाँ हिस्सा सम्पत्तिदान में अर्पित किया।

दतिया जिले की दतिया तहसील में, छतरपुर जिले की बिजावर तहसील में और पन्ना जिले की पन्ना तहसील में सामूहिक पदयात्रा-शिविर हुए। मध्यभारत भूदान-यज्ञ-समिति के संयोजक, श्री देवेन्द्र कुमार गुप्त, श्री सुरेशराम भाई और महाकोशल प्रान्तीय काँग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष श्री सेठ गोविन्ददास एवं जबलपुर के कर्मठ भूदान-कार्यकर्ता श्री व्योहार राजेन्द्र सिंह ने कार्यकर्ताओं का मार्ग-दर्शन किया।

विं० प्र० भूदान-यज्ञ-समिति, छतरपुर —सहसंयोजक

बंबई

२० अक्टूबर से १० नवंबर तक १२५५) की २१७० पुस्तकों की बिक्री हुई। भूदान-पत्रों के १८० ग्राहक बने। दफ्तर खर्च के लिए चार भाइयों से २५१) का दान मिला। कूपदान ५००) और अंकितदान १०१) मिला।

१० नवंबर को "मणिभुवन" में कार्यकर्ताओं की सभा हुई, जिसमें श्री जयप्रकाश नारायण ने भूदान के बारे में मार्गदर्शन किया और प्रश्नोत्तर भी हुए।

—मंत्री

दिल्ली

श्री रामस्वरूपजी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं की एक टोली ने बरेली थाने में १२ सितंबर से १ अक्टूबर तक ६४ गाँवों में ८६ मील की पदयात्रा की, जिसमें ७२) के लगभग साहित्य-बिक्री हुई। ४० बीघा भूदान और ६००) रु० सालाना के सम्पत्तिदान-पत्र मिले। श्री सी. ए. मेनन ने लगभग ४०० संसद-सदस्यों से भूदान-कार्य में सहयोग देने के लिए अपील की। दिल्ली की प्रमुख सार्वजनिक लाइब्रेरियों से भी अपील की कि वे भूदान-साहित्य को अपने यहाँ स्थान दें। विदेशी राजदूत-कार्यालयों से भूदान कार्य में सक्रिय भाग लेने के लिए अपील की गयी।

सितंबर अंत तक दिल्ली प्रदेश में कुल ३९६ एकड़ भूमि मिली, जिसमें से १५७ एकड़ का वितरण हुआ। १६७५९) के सम्पत्तिदान-पत्र मिले। मई से सितंबर तक १७२) की साहित्य-बिक्री हुई।

गांधी-जयंती के निमित्त श्री किशनलाल वैद्यजी के नेतृत्व में २ अक्टूबर से १ नवम्बर तक पाँच कार्यकर्ताओं की टोली ने पदयात्रा की। लगातार वर्षा में भी पदयात्रा जारी रही। काफी भूदान मिला।

दिल्ली भूदान-समिति —संयोजक

पंजाब भूदान अखंड पदयात्रा

२२ जुलाई '५६ से जो अखंड पदयात्रा-टोली निकली थी, उसे २२ अक्टूबर को छह मास पूर्ण हुए। इस अवसर पर राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, पंजाब के राज्यपाल, सर्व-सेवा-संघ के सहमंत्री श्री वल्लभस्वामी आदि लोगों से शुभकामनाएँ प्राप्त हुईं। अक्टूबर के अंत तक पदयात्रा-टोली को कुल २७९६ बीघा भूमिदान, ११४३९) का संपत्तिदान, ३६ हल, २५९ मन बीज, ३ मकान, ८९१) का साधन-दान, ५५ भाइयों का समयदान मिला। ६३७) की साहित्य-बिक्री हुई। १६९ ग्राहक बने। ६८ परिवारों में ११९० बीघा भूमि वितरित की गयी। कुल १००० मील की पदयात्रा में २०५ गाँवों में प्रचार हुआ। —यशपाल मित्तल

पंजाब के १६ जिलों में अक्टूबर अंत तक ४०३४ दानपत्रों द्वारा १६४२९ एकड़ भूमि-दान मिला। ३३७ परिवारों में १३७८ एकड़ भूमि वितरित की गयी। १५६० संपत्तिदाताओं से ८७,९४५) के दानपत्र मिले। गुडगाँव जिले में ६५ दाताओं से २२१ मन बीज मिला। उर्दू और पंजाबी भूदान-पत्रों के कुल ९६८ ग्राहक हैं।

—कार्यालय मंत्री

उत्तर प्रदेश नयी तालीम-सम्मेलन, सेवापुरी

उत्तर प्रदेश के कई सरकारी ट्रेनिंग कालेजों के प्रधानाध्यापकों, छात्र-शिक्षकों, अर्धसरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों, गांधी स्मारक-निधि के ग्रामसेवकों व बुनियादी शालाओं के शिक्षकों के बीच १२ और १३ नवम्बर को श्री धीरेन्द्रभाई की अध्यक्षता में उ० प्र० नयी तालीम-सम्मेलन सेवापुरी में हुआ।

श्री धीरेन्द्रभाई ने कहा कि शोषण-मुक्त और शासन-निरपेक्ष समाज की स्थापना का उत्तरदायित्व नयी तालीम का है। 'समाज का जीवन-मान', 'शिक्षा में स्वावलम्बन का स्थान', 'नयी तालीम के अध्यापकों की तैयारी' और 'जीवनदायी साहित्य-निर्माण,' इन चार विषयों पर सम्मेलन में चर्चा हुई। निश्चय हुआ कि शिक्षा-संस्थाएँ अपने सम्पर्क में आने वाले निकटस्थ गाँवों का सर्वेक्षण कर पता लगायें कि गाँव का सर्वाधिक अभावग्रस्त व्यक्ति क्या खाता है? और उसकी कितनी कमाई है इस बीच की कमी को पूरा करना जीवनमान का कार्यक्रम माना जाय। नयी तालीम के विद्यार्थी गाँव की ज़मीन पर ६ घंटा शरीरश्रम करके धर्मगोलक की भाँति किसी योजना के माध्यम से जो इकट्ठा करेंगे, वह शाला का स्वावलम्बन होगा। ६ घंटा उनके साथ काम करके शिक्षक २ घंटा उनको बौद्धिक ज्ञान भी दे जो पर्याप्त है। नयी तालीम के अध्यापकों में निष्ठा का होना अनिवार्य गुण माना जाय। प्रशिक्षण-काल में उनके अन्दर यह निष्ठा उत्पन्न करना ट्रेनिंग-सेंटरों का काम है। नयी तालीम के अनुरूप जीवनदायी साहित्य-निर्माण की आवश्यकता अवश्य है, पर जब तक ऐसे साहित्य का निर्माण नहीं होता है, तब तक शिक्षक उद्योगों की प्रक्रियाओं के माध्यम से प्रौद्योगिक ज्ञान और सामाजिक वातावरण से उनको जीवन सम्बन्धी जानकारी दें। जिन गाँवों में समूचा ग्रामदान प्राप्त हुआ है, वहाँ नयी तालीम शाला ग्रामशाला के रूप में चले।

इलाहाबाद में खादी-ग्रामोद्योग-प्रदर्शनी

गांधियन क्लब, प्रयाग विश्वविद्यालय ने १२ नवम्बर से १६ नवम्बर तक विश्वविद्यालय कम्पाउन्ड में खादी-ग्रामोद्योग-प्रदर्शनी का आयोजन किया,

www.vinoba.in

जिसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री बी० एन० झा ने किया। प्रदर्शनी में तेलघानी, मधुमक्खी-पालन, मिट्टी का काम, दियासलाई उद्योग, साबुन-उद्योग, हाथचक्की, हाथ-कागज़ आदि विविध उद्योगों के अलावा अम्बर चरखा लोगों के लिए विशेष आकर्षण की वस्तु थी। सर्वोदय-साहित्य की बिक्री से यह प्रकट हो रहा था कि जनता की रुचि इस ओर बढ़ रही है।

१५ नवम्बर को प्रदर्शनी के समीपवर्ती मैदान में श्री धीरेन्द्र भाई का 'सर्वोदय और विज्ञान' विषय पर भाषण हुआ। शोषण का क्रम बताते हुए हुजूर और मजूर-वर्ग की उन्होंने बड़ी ही सुन्दर व्याख्या की—"आज हुजूरों की जमात बहुत बढ़ गयी है, अतः वे भी सूख रहे हैं। मजूर हँसिया लेकर हुजूरों को मिटा दें, इसके बजाय हुजूरों को कुदाल लेकर उनके साथ एक हो जाना चाहिए। बड़ी-बड़ी हिंसाओं को बचाने के लिए छोटी-छोटी हिंसाओं को भी रोकना ज़रूरी है। विज्ञान के युग में यदि समझबूझ कर नहीं चला गया, तो वही हाल होगा कि Operation was successful, but the patient died on the table. (आपरेशन सफल हुआ, पर रोगी शय्या पर ही मर गया।) आज जो co-existence (सहअस्तित्व) की बात चारों ओर चल रही है, उसमें दोस्त कहते हुए भी पीछे से छुरा-भोंकने की नीति यदि चलती रही, तो Non-existence (विनाश) ही होने वाला है। विज्ञान के युग में भौतिक प्रगति और यंत्रों के दिनोंदिन विकास से समाज समाप्ति के कगार तक आ पहुँचा है। उसके बचाव के लिए सर्वोदय ही एक सम्बल है।"

——

संवाद-सूचनाएँ :

सरंजाम-सम्मेलन

गत १५-२० वर्षों से खादी-सरंजाम में प्रतिवर्ष कुछ-न-कुछ सुधार होते गये। चरखा-संघ का एक प्रयोग-विभाग ही अलग से यह कार्य करता रहा। उसी तरह कई संस्थाओं की ओर से भी इसके लिए खास प्रयत्न किये गये। कई जगह व्यक्तिगत रूप से भी प्रयत्न होते रहे। सन १९५१ तक अखिल भारत चरखा-संघ का यह एक कार्यक्रम ही हो गया था कि ऐसे सरंजाम-कलाकारों का एक सम्मेलन किया जाय और जितने नये आविष्कार किये गये हों, उनकी छानबीन करके उनके संबंध में निर्णय ले तथा उपयोगी सुधार के लिए पारितोषक भी दें। अनेक कारणों से यह सिलसिला गत २-४ वर्षों में जारी नहीं रह सका। लेकिन इसी बीच कताई-सरंजाम में महत्त्वपूर्ण फरक अंबर चरखे के आविष्कार के कारण हुए हैं।

सन् १९५४ तक अंबर-चरखा पूर्णतया प्रयोगावस्था में ही था। इसी कारण तब तक अंबर के नमूने में किये गये १२-१४ बदल प्रयोग विभाग में ही कर लेना आसान था। सन् १९५५ में बड़े पैमाने पर अंबर चरखे के उत्पादन-क्षमता का अंदाज लगाने लायक एक मॉडेल तैयार हो गया, जिस पर गत वर्ष-डेढ़वर्ष तक कताई का अनुभव लिया गया। प्रत्यक्ष में इसी मॉडेल पर कताई करते-करते ही कुछ अनुकूल सुधार कई लोगों ने सुझाये, जिनका शास्त्रीय ढंग से परीक्षण होकर उन सुधारों की उपयोगिता पर निर्णय लेना और आवश्यक हो, तो आगे के वर्ष-दो वर्ष के लिए पुराने अंबर मॉडेल में भी बदल कर देना जरूरी हो गया है।

यह सम्मेलन दिसम्बर के तीसरे सप्ताह में अहमदाबाद में लेने का सोचा गया है। सम्मेलन चार दिन का रहेगा। पहले दो दिन सुधरे हुए औजारों का परीक्षण तथा प्रयोगकारों की प्राथमिक चर्चा होगी और बाद के दो दिन चर्चा, सभा, निर्णय आदि होगा। सभा की निश्चित तारीखें बाद में मालूम की जावेगी।

अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, वर्धा —ना. रा. सोवनी, संयोजक
खादी-ग्रामोद्योग-समिति

——

'ग्रामोद्योग-पत्रिका' बंद होगी

जब से 'ग्रामोद्योग-पत्रिका' (अंग्रेजी) निकली, तभी से श्री जो० कॉ० कुमारप्पा उसके संपादक रहे हैं। इस पत्रिका की मार्फत उन्होंने देश के सामने समय-समय पर जो आर्थिक और दूसरी तरह की समस्याएँ उपस्थित हुईं, उनके विषय में प्रामाणिक रूप से लोकमत को सुशिक्षित किया है। भारत तथा अन्य देशों में जिन लोगों को अहिंसक समाज रचना में रुचि है, उनके सामने इस पत्रिका ने भविष्य के समाज की आर्थिक और सामाजिक रचना का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। तबीयत न अच्छी होने पर भी पाठकों की तरफ से अपना कर्तव्य पूरा करने में संपादक कुमारप्पा कभी नहीं चूके। लेकिन इधर उनकी सेहत कुछ इतनी खराब रही है कि उनके डॉक्टरों ने उन्हें संपादन का काम करने की मुमानियत कर दी है।

'ग्रामोद्योग-पत्रिका' अ० भा० सर्व-सेवा-संघ के तत्त्वावधान में प्रकाशित होती रही है। यदि कुमारप्पाजी उसमें नहीं लिख सकते, तो वह पत्रिका अपने पाठकों को अब कौनसा समाधान दिला सकती है? ऐसी परिस्थिति में 'ग्रामोद्योग-पत्रिका' का प्रकाशन १ ली जनवरी १९५७ से बंद किया जायगा। उसके कुछ ऐसे ग्राहक भी होंगे, जिनका चंदा उस तारीख को समाप्त नहीं होता। यदि उनकी इच्छा हो, तो चंदे की बकाया रकम से वे या तो अंग्रेजी 'भूदान' ले सकते हैं या फिर कुमारप्पाजी की किताबों में कोई किताब खरीद सकते हैं।

इस संबंध में पत्रव्यवहार कृपया सर्व-सेवा-संघ, प्रकाशन-विभाग, काकासाहेब, वर्धा के पते से करें। —धीरेंद्र मजूमदार, अध्यक्ष
अ० भा० सर्व-सेवा-संघ

——

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन-समाचार

संघ के नये प्रकाशन :

सर्वोदय-पदयात्रा : ले० श्री दामोदरदास मूँदड़ा पृष्ठ-संख्या २२५ मूल्य १)

७ मार्च, ५१ को सेवाग्राम से शिवरामपल्ली सर्वोदय-सम्मेलन के लिए विनोबाजी की पहली पदयात्रा प्रारम्भ हुई। मार्ग के गाँवों में सर्वोदय, स्वराज्य, ग्रामोद्योग, खादी आदि का पावन सन्देश सुनाते हुए लगभग सवा महीने तक उनकी यह पदयात्रा सतत चलती रही। इस पदयात्रा के पश्चात् ही १८ अप्रैल, ५१ को पोचमपल्ली में भूदान-विचार का उदय हुआ।

श्री मूँदड़ाजी ने प्रस्तुत पुस्तक में विनोबाजी के विचारों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करते हुए पदयात्रा के सान्निध्य का चित्र भी अपनी मनोरम शैली द्वारा अंकित कर दिया है।

विषमता की जड़—सूदखोरी : ले० अप्पा पटवर्धन (प्रेस में) मूल्य ।)

प्रचलित समाज-रचना में ब्याज शोषण का एक प्रधान अंग बन गया है, जब कि सभी धर्मों ने सूदखोरी का निषेध किया है। सूदखोरी को विषमता की जड़ प्रमाणित करते हुए इसके ऐतिहासिक, धार्मिक और सामाजिक पहलुओं पर विस्तारपूर्वक विवेचन इस पुस्तक में संगृहीत है।

अ. भा. सर्व-सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी —संचालक

——

श्री विनोबाजी के पत्रव्यवहार का स्थायी पता—

C/o Tamilnad Bhoodan-yajna samiti, Ooliyar Agam, P.O. GANDHIGRAM (Dt. Madurai)

मार्फत-तमिलनाड भूदान-यज्ञ-समिति, ऊलियर आगम, पो० गांधीग्राम (जिला—मदुराई)

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१.	भूदान द्वारा विश्वशान्ति	विनोबा	१
२.	समाज को सर्वार्पण ही सच्चा धर्म	जयप्रकाश नारायण	३
३.	एक बनेंगे, नेक बनेंगे (कविता)	परमानंद, भवनेश	३
४.	संपत्ति-संग्रह की वृत्ति	विनोबा	४
५.	सचेतन उदासीनता और असहयोग	धीरेन्द्र मजूमदार	४
६.	ग्रामधर्म के तीन सूत्र	विनोबा	५
७.	यंत्र-युग में भी बैलगाड़ी	गोपाल कृष्ण मल्लिक	५
८.	एकाग्रता का उत्तम साधन : चरखा	विनोबा	६
९.	सर्वोदय की दृष्टि :		
	१. स्वावलंबी अर्थनीति कैसे बनेगी?	दादा धर्माधिकारी	६
१०.	सामूहिक सज्जनता की शक्ति	विनोबा	७
११.	श्री जयप्रकाश बाबू की अनोखी बदरी-केदार-यात्रा	ओमप्रकाश	८
१२.	बाबा राघवदासजी का प्रेरक और महान् संकल्प	रामवृक्ष शास्त्री	९
१३.	तमिलनाड की पदयात्रा से	निर्मला देशपांडे	९
१४.	चार आर्य सत्य	भगवान् बुद्ध	१०
१५.	भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण, संवाद-सूचनाएँ आदि		११–१२

सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भागवत-भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी। फोन नं० १२८५

www.vinoba.in